9528312726

ऋतम्भरा

2019–20

मुलतानीमल मोदी कॉलेज मोदीनगर

ऋतम्भरा

वर्ष : 2019-2020 अंक : 63

विक्रम संवत् 2077 शक संवत 1942 हिजरी 1441

डॉ. डी. के. मोदी
अध्यक्ष
प्रबन्ध समिति

डॉ. अजय शर्मा
प्राचार्य एवं संरक्षक

सम्पादक मण्डल

डॉ. अजय शर्मा	–	संरक्षक
डॉ. विवेकशील	–	प्रधान सम्पादक
डॉ. प्राची अग्रवाल	–	सदस्य
डॉ. नीतू सिंह	–	सदस्य
कु. मोना नागपाल	–	सदस्य
डॉ. कोमल गुप्ता	–	सदस्य
श्री अरूण कुमार सिंह	–	सदस्य
श्रीमती गीतांजलि शर्मा	–	सदस्य
कु. ऋचा यादव	–	छात्र सदस्य
विशाल राजपूत	–	छात्र सदस्य
श्री सुनील कुमार	–	कार्यालय सदस्य

मुलतानीमल मोदी कॉलेज
मोदी नगर–201204 (उ.प्र.)
वेबसाईट : www.mmcmodinagar.ac.in
ई–मेल : info@mmcmodinagar.ac.in

सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

युवा एवं प्रगतिशील नेतृत्व की प्रतिमूर्ति

डॉ० देवेन्द्र कुमार मोदी

(अध्यक्ष, महाविद्यालय प्रबन्ध समिति)

एवम्

नेपथ्य में महाविद्यालय की अभिप्रेरणा

डॉ. के. एन. मोदी एवं पूज्य माँ जी गिन्नी मोदी

Dr. Devendra K. Modi
B.Tech. (Chem. Engg.) M.A. (Eco.),
M.B.A., Ph. D., D.Lit

Message

It is a matter of great pleasure for me to know that Multanimal Modi College is going to publish its, Annual Magazine **'Ritambhara'.**

The publication of the annual magazine is one of the valuable assests of the institution as it provides its students, teachers and non-teaching staff an appropriate platform to put forth their creative potential. I trust that this endeavor will contribute in further encouraging the Literary talents of the young generation.

I warmly send my blessings for the Magazine with all my best wishes for the students and staff members of the esteemed institution.

(Dr. D. K. Modi)
President

16, Community Center, New Friends Colony, New Delh-110 025
Ph.: 26323264 / 41034516 E-mail : modieducation@gmail.com

CH. CHARAN SINGH UNIVERSITY
MEERUT (U.P.) INDIA

Professor N.K. Taneja
Ph.D. (Economics)
Vice-Chancellor

Ref.No. SVC/20/1329

MESSAGE

It is heartening to know that Multanimal Modi College, Modinagar is bringing out its annual magazine **"RITAMBHARA".** College magazine provides an opportunity to the students to express their views on issues of contemporary relevance.

It is a commendable effort aimed at harnessing creative skills of the students and it is hoped that they stand to benefit out of it. I also wish **"RITAMBHARA"** goes a long way in accomplishing the goal of value education. I convey my good wishes and felicitations to the Principal, members of faculty and students for bringing out this publication.

(N.K. Teneja)

V.C. LODGE, UNIVERSITY CAMPUS,
MEERUT-250 004

Office: +91-0121-2760554, 2760551,
Fax: 2762838
Camp Office: +91-0121-2600066,
Fax: 2760577

Web: ccsuniversity.ac.in
E-mail: vc@ccsuniversity.ac.in

प्रोफेसर (डॉ.) राजीव कुमार गुप्ता
(एम.कॉम., एल–एल.बी., पी–एच.डी., एम.बी.ए., एम.जे.)
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
मेरठ।

दूरभाष :
0121-2400444, 09868106027
Office: Regional Higher Education Officer,
E-mail : rheomeerut@yahoo.com www.rheomrt.org

पत्र संख्या : 14/दिनांक 21.01.2021

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि **मुलतानीमल मोदी महाविद्यालय मोदीनगर, गाजियाबाद** अपनी वार्षिक पत्रिका '**ऋतम्भरा सत्र** 2019–20' का अंक प्रकाशित करने जा रहा है। महाविद्यालय पत्रिका विचारों की अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करती है, जिसका प्रयोग करना सभी विद्यार्थियों का कर्तव्य है। यह पत्रिका महाविद्यालय की रचनात्मक भूमिका एवं कुशल नेतृत्व क्षमता का एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका समयान्तर्गत प्रकाशित होकर विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। यह पाठकों को रूचिकर तो लगेगी ही, साथ में देश और समाज के लिये कुछ करने की प्रेरणा भी देगी तथा यह अनुभव भी होगा कि इस अंक को पूर्व से बेहतर प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

महाविद्यालय परिवार और विद्यार्थियों को प्रेरणादायी और समाजोपयोगी पत्रिका के प्रकाशन के लिये बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(राजीव कुमार गुप्ता)

(प्राचार्य)
मुलतानीमल मोदी महाविद्यालय मोदीनगर,
गाजियाबाद।

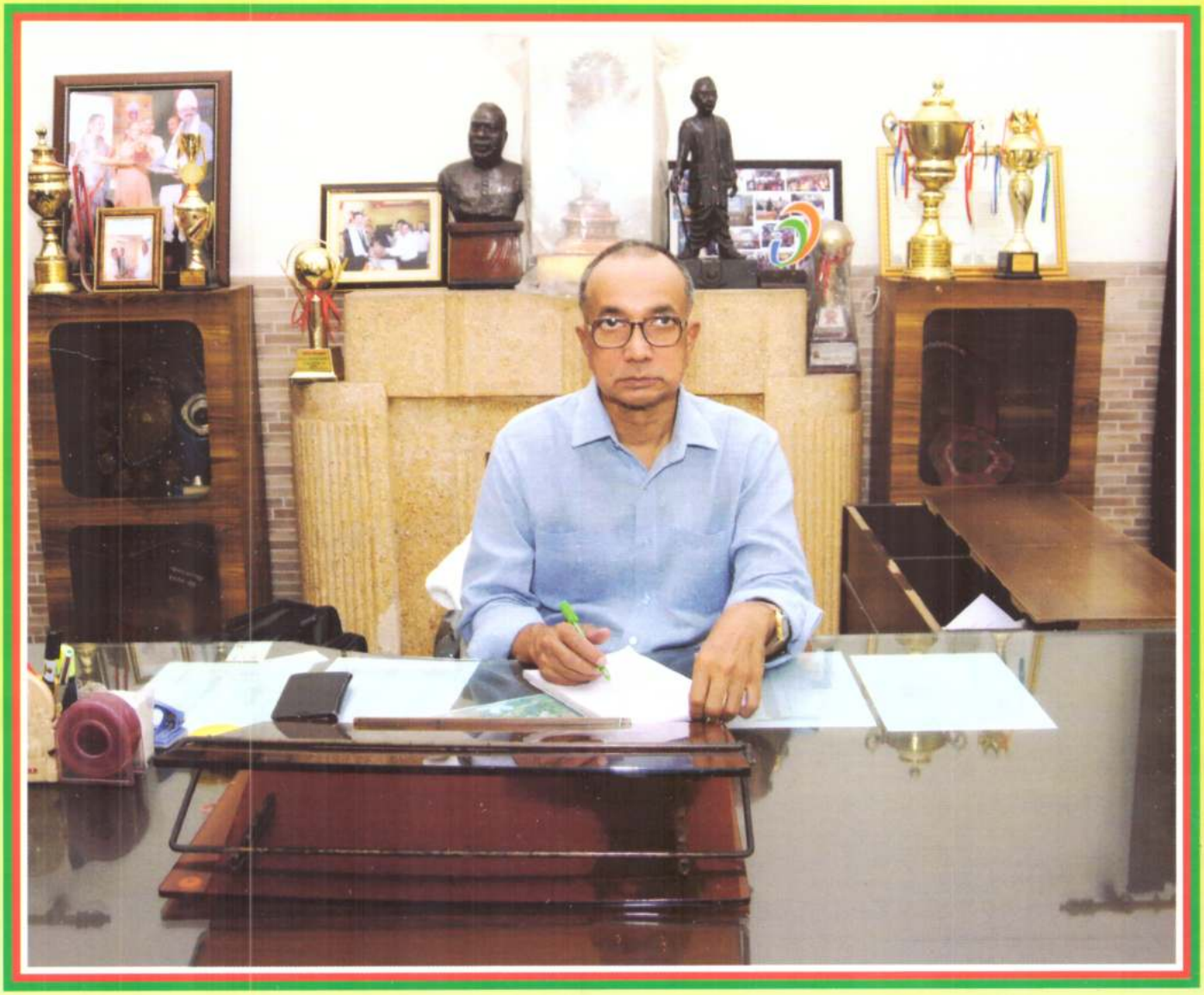

महाविद्यालय के कर्मठ एवं दूरदर्शी प्राचार्य

डॉ0 अजय शर्मा

प्राचार्य की कलम से...

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन को अत्यंत दुर्लभ कहा गया है। ईश्वर को अंशी व जीवात्मा को ईश्वर का अंश कहा गया है। अतः मानव जीवन ईश्वर प्रदत्त बहुमूल्य उपलब्धि है। भारतीय संस्कृति ही एकमात्र ऐसी संस्कृति है जो मानव के समक्ष उसके लक्ष्य को स्पष्ट करती है तथा उसे प्राप्त करने के लिये कर्त्तव्यों एवं निर्देशों को प्रस्तुत करती है। जिनके अनुसार जीवन यापन करते हुये मानव अपने सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने तथा जीवन को सार्थक बनाने में सक्षम होता है। यही कारण है कि हमारी संस्कृति आज भी गौरवपूर्ण एवं महिमामयी कही जाती है क्योंकि यह मानव का सम्पूर्ण विकास कर उसे अपने परम अधिगन्तव्य तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुरुषार्थ, कर्म का सिद्धान्त संस्कार आदि इसी प्रकार के कर्त्तव्यों एवं निर्देशों के प्रतीक है। भारतीय संस्कृति धर्म प्रधान एवं त्यागमयी संस्कृति है। इसमें अध्यात्मवाद एवं भौतिकवाद का सुन्दर समन्वय दृष्टिगत होता है। इसके अतिरिक्त सहिष्णुता, उदारता, व्यापकता तथा समानता आदि भी इसकी अन्य विशेषतायें हैं। इन विलक्षणताओं से मानव द्वारा व्यवहार एवं कर्म करते हुये एक सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित सामाजिक परिवेश का स्वतः ही निर्माण हो जाता है। ऐसा सामाजिक वातावरण मानव में मानवोचित गुणों का विकास करके उसमें निहित समस्त क्षमताओं को मानव एवं समाज दोनों के लिये लाभप्रद बनाता है। ऐसी स्थिति में मानव के लिये कहीं भटकने एवं गुमराह होने की आवश्यकता नहीं रहती। हमारी मौलिक संस्कृति मानव एवं समाज दोनों के हितों को ध्यान में रखके उनके सर्वांगीण विकास पर बल देती है।

भारतीय संस्कृति में गुरु–शिष्य का पावन बंधन, आदिकाल से ही चला आ रहा है। वशिष्ठ, विश्वामित्र, संदीपनी, द्रोणाचार्य, बुद्ध, महावीर, चाणक्य, कबीर, नानक, रामकृष्ण परमहंस तथा रवीन्द्र नाथ ठाकुर तक ये उद्धात परंपरा चलती आयी है। राम, कृष्ण, सुदामा, एकलव्य, कर्ण, अर्जुन, अरुणि, आनंद, चन्द्रगुप्त, विवेकानंद ने शिष्य रूप में जग जीता था, मानवता का हृदय जीता था।

ज्ञान सुपात्र ही ले पाता है। विद्यार्थी केवल और केवल ज्ञानार्जन के लिये बना है। मैं अपने प्रिय विद्यार्थियों से यही कहना चाहता हूँ कि विद्याध्ययन आपका धर्म है। अच्छी पुस्तकें आपकी सच्ची साथी हैं। बड़ों का सम्मान, सादा जीवन, शिक्षा के प्रति समर्पण, व्यसनों से दूरी, गुरु का आज्ञापालन, सभी से बिना भेद के सद्भाव–ये ही आपके दीक्षा–मंत्र है।

शास्त्रों में कहा गया है–"वीर भोग्या वसुंधरा" अर्थात् जो श्रम करेगा, उद्यम करेगा, वही धरा के ऐश्वर्य–वैभव का उपभोग करेगा। अतः अपनी शक्ति एवं क्षमताओं को पहचानों, अपने विश्वास को समेटों और पूरी सामर्थ्य के साथ प्रयास करो। सफलता आपके कदम चूमेंगी।

सम्पादक मंडल के प्रधान सम्पादक डॉ. विवेक शील, उपसम्पादक डॉ. प्राची अग्रवाल एवं सदस्य डॉ. नीतू सिंह, डॉ. मोना नागपाल, डॉ. कोमल गुप्ता, डॉ. अरूण कुमार सिंह, श्रीमती गीतांजलि शर्मा एवं सुश्री ऋचा यादव को "ऋतम्भरा" के सफल सम्पादन हेतु शुभकामनाएँ।

मंगल कामनाओं सहित!

डॉ. अजय शर्मा
प्राचार्य

PRIDE OF THE COLLEGE

Mrs. Shalini Gupta
Assistant Professor
Dept. of Library & Information Science
M.M. College, Modinagar
UGC NET qualified (Dec.-2019) in Library & Information Science

Rakhi (M.A., Hindi)
1st in Rashtriya Kavita
Paath Pratiyogita

Vishal (M.A., History)
3rd in Rashtriya Kavita
Paath Pratiyogita

Rakhi (M.A., 1st)
100 mtr., 400 mtr.
All Over College Champion
2019-2020

Atul Kumar
UGC-NET JRF June 2019
Commerce

Nishtha
UGC-NET December 2019
English

Soni (B.Sc. 3rd)
Triple Jump
Participated in Intercollegiate
Athletics 2019-2020

PRIDE OF THE COLLEGE

Himanshu Arya (B.P.E.S. 1st)
Participated in Intercollegiate
Shooting (Air Pistol 10 mtr.)

Rohit Vashistha
(B.P.E.S.)
College Champion
2019-2020

Neetika Gaur
Participated in Intercollegiate
Athletics

Vishakha Panwar
Participated in Intercollegiate
Athletics

Ankur Nehra (B.P.E.S. 2nd)
Participated in Intercollegiate
Cricket 2019-2020

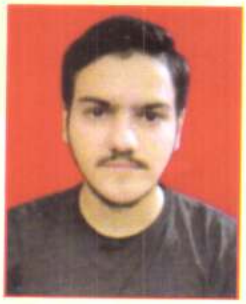

Aakash Kumar (B.P.E.S. 1st)
Participated in Intercollegiate
Cricket 2019-2020

Anit Kumar
(M.Sc., Botany)
Sport-Power Lifting
2 times University Champion-Session 2018-20
1 time Open National Champion 2019 (Gold Medal)

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

गोवर्धन पूजा (महाविद्यालय वार्षिकोत्सव) में विशिष्ट अतिथि पधारते हुए

राष्ट्रीय संगोष्ठी "अन्त:अनुशासनात्मक शोध में नवीन प्रवृत्तियाँ"

गोवर्धन पूजा (महाविद्यालय वार्षिकोत्सव) पुरस्कृत होते हुए प्रतिभावान विद्यार्थी

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

शिक्षक दिवस के अवसर पर महामहिम राज्यपाल एवं माननीय मुख्यमन्त्री जी से
"सरस्वती सम्मान" प्राप्त करते डॉ. कृष्णकान्त शर्मा

वनमहोत्सव वृक्षारोपण कार्यक्रम

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

राष्ट्रीय संगोष्ठी
"अन्त :अनुशासनात्मक
शोध में नवीन प्रवृत्तियाँ"

राष्ट्रीय संगोष्ठी
"अन्त :अनुशासनात्मक
शोध में नवीन प्रवृत्तियाँ"

राष्ट्रीय संगोष्ठी
"अन्त :अनुशासनात्मक
शोध में नवीन प्रवृत्तियाँ"

Editorial

Spirituality and Science, both seek the truth. The most important thing for a seeker of both is to ask questions. Nothing should be taken forgranted. One should go beyond dogma and belief and challenge one's own perceptions and look for answers. Knowledge and wisdom are not obtained merely by getting the answer to a particular question, but by the process of seeking, and of asking questions. Also, concepts play a significant role in our journey in science and spirituality. We need to understand them as concepts and not as absolute truths. The world is in the dynamic process of motion, and knowledge itself progresses along with it. Even great philosophers and scientists had to change their conclusions, and they had the largeness of mind to accept that change. One has to gain open mindedness, the mind has constantly to enlarge itself until it develops the faculties of inspiration, of revelation, of intuition. On the level of body, mind and soul, one has to develop simultaneously, an introversion to find the centre and extroversion to enlarge oneself.

I would like to take this opportunity to express my heart felt gratitude for my esteemed Principal, Dr. Ajai Sharma Sir, whose unconditional support and motivation has always been a great source of inspiration in my endeavors. I would also like to thank my entire editional team. Dr. Prachi Agarwal, Dr. Neetu Singh, Ms. Mona Nagpal, Dr. Komal Gupta, Mr. Arun Kumar Singh, Smt. Geetangali Sharma and Ms. Richa Yadav, for their wholehearted support and cooperation. I would also like to thank Mr. Pawan Bhatnagar and Mr. Sanjay Maskara for their valuable support in the publication of this magazine.

Vivek Sheel

अनुक्रमणिका

1.	स्वामी विवेकानन्द	5
2.	रख खुद से उम्मीद	6
3.	मैं और मेरे विचार	7
4.	पापा	8
5.	भारतीय नारी का स्वरूप	9
6.	बेटी	10
7.	महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका	11
8.	पापा की परी	16
9.	पावन पर्व हमारा	17
10.	भारतीय एकता के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आधार	18
11.	सच्चा साथी	19
12.	अध्यापक	20
13.	उड़ान	21
14.	सपना	21
15.	मैं भविष्य हूँ तुम्हारा	22
16.	निष्काम कर्म	23
17.	भारत माता	24
18.	गुरु ज्ञान देते हैं....	25
19.	बचपन	26
20.	अजन्मी बेटी का अपनी माँ के नाम पत्र	27
21.	नारी हैं हम नारी हैं	28
22.	शहीद वीरों का कर्ज	29
23.	शिक्षक का महत्त्व	30
24.	हिन्दी वर्णमाला का क्रमिक कवितामय आयोजन	31
25.	असम्भव कुछ नहीं	32
26.	इतिहास	33
27.	जनसंख्या विस्फोट (कारण व निवारण)	34
28.	बेटी की चाह	36
29.	भारत में जनसंख्या वृद्धि : कारण और निवारण	37
30.	ये सुन्दर देश हमारा	38
31.	जीवन में किताबों का महत्त्व	39
32.	राधा, दादी और कल्पना	40

33. संवाद 41
34. निवेश, क्रिकेट और चिड़िया 42
35. वशिष्ठ, मेला और गुब्बारा 43
36. राजनीतिक हत्या 44
37. सोशल मीडिया में कैरियर 45
38. नीले पत्थर की कहानी 46
39. अनमोल वचन 47
40. ई०वी० रामास्वामी नायकर – एशिया का सुकरात 48
41. राष्ट्रीय सेवा योजना – व्यक्तित्व निखारने का एक मंच 'मैं नहीं आप' 50
42. Choices 51
43. Election In India 52
44. Save Girl Child 53
45. A "paper Less Society" 54
46. The Last Page Of My Note Book 55
47. 3 Things To Remember 56
48. The Word Of The Year 57
49. Some Examples Of Physics In Everyday Life 58
50. CRISPR/CAS9 Technology Has Introduced New Opportunities In Cancer Therapies, Curing Inherited Diseases And Also In Plant Inbreeding 59
51. Little Boy 60
52. Role Of Librarians In Modern Era 61
53. Law Libraries 62
54. Science, Soldiers, Farmers 64
55. No Success Without Competition 65
56. An Open Letter From The Girl Child To The Leaders Of The Nation 66
57. Some Meanings 68
58. Annual Report 2019-2020 Department Of Library & Information Science 69
59. Annual Report 2019-2020 Department Of Biotechnology 70
60. Annual Report 2019-2020 Department Of Computer Science And Business Administration 71
61. रोवर्स रेंजर्स द्वारा किए गए विशेष कार्य 72
62. राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष रिपोर्ट : कोविड–19 काल 74

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व स्वयं प्रस्तोता का है।

STATEMENTS ABOUT THE OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT THE MAGAZINE

M. M. College Magazine

RITAMBHARA

Form IV

(See Rule 8)

Place of Publication	:	M.M. College Modinagar (Distt. Ghaziabad)
Periodicity of Publication	:	Annual
Publisher's Name	:	Dr. Ajai Sharma
Nationality	:	Indian
Address	:	M.M. College Modinagar (Distt. Ghaziabad)
Editor's Name	:	Dr. Vivek Sheel
Nationality	:	Indian
Address	:	Deptt. of History M.M. College Modinagar (Distt. Ghaziabad)
Printer's Name	:	S.B. Printers
Nationality	:	Indian
Address	:	Opp. Kotwali Old Tehsil, Meerut (U.P.) Mob: 9837020342
Name and address of individuals Who own the magazine and Particulars of shareholders holding more than once percent of the total capital	:	Nill (A College Magazine)

I, Dr. Ajai Sharma hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dr. Ajai Sharma
Principal

स्वामी विवेकानन्द

ऋषभ प्रजापति
बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ भारती को दी पहचान, स्वामी विवेकानन्द ने।
विश्व को दिया था ज्ञान, स्वामी विवेकानन्द ने॥
माँ भुवनेश्वरी के लालन में, पिता विश्वनाथ के पालन में।
गुरु परमहंस से पाया ज्ञान, स्वामी विवेकानन्द ने।
विश्व को दिया था ज्ञान स्वामी विवेकानन्द ने॥
एक सन्यासी के वेश में, कोने कोने में देश में।
खोजे ऋषि मुनि और विद्वान, स्वामी विवेकानन्द ने।
विश्व को दिया था ज्ञान स्वामी विवेकानन्द ने॥
विश्व धर्म सभा के सत्र में, माँ भारती के पुत्र ने।
सर्वश्रेष्ठ पाया स्थान, स्वामी विवेकानन्द ने।
विश्व को दिया था ज्ञान स्वामी विवेकानन्द ने॥
बन्धुत्व का सन्देश था, सुख शांति का उपदेश था।
किया सारे धर्मों का सम्मान, स्वामी विवेकानन्द ने।
विश्व को दिया था ज्ञान स्वामी विवेकानन्द ने॥
जागो उठकर विश्व जगाओ, जगत गुरु का धर्म निभाओ।
भारत माँ का यह वरदान, स्वामी विवेकानन्द ने।
विश्व को दिया था ज्ञान स्वामी विवेकानन्द ने॥
कर्मयोग का भक्ति योग का, राजयोग का ज्ञान योग का।
नवयुग का नवयोग विहान, स्वामी विवेकानन्द ने।
विश्व को दिया था ज्ञान स्वामी विवेकानन्द ने॥

रख खुद से उम्मीद

वैशाली सिंह
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष

रख खुद से उम्मीद,
रख खुद से उम्मीद,
कुछ कर गुजरने की,
कुछ हारकर जीतने की।
रख खुद से उम्मीद,
रख खुद से उम्मीद,
कुछ पंख लगाने की,
कुछ दूर तक जाने की।
रख खुद से उम्मीद,
रख खुद से उम्मीद,
कुछ नाम करने की,
कुछ याद करने की।
"तू जीना छोड़ दूसरों के दम,
पर अब रख खुद ही से उम्मीद" ॥

एक सफल व्यक्ति वह है जो औरों द्वारा अपने ऊपर फेंके गए ईंटों से एक मजबूत नींव बना सके।

—डेविड ब्रिंकले

मैं और मेरे विचार

आदित्य शर्मा
बी.सी.ए. प्रथम वर्ष

किताबों के पन्ने पलटकर सोचता हूँ।
यूँ पलट जाए मेरी जिंदगी तो क्या बात है॥
ख्वाबों में रोज मिलता है जो।
हकीकत में मिल जाए तो क्या बात है॥
कुछ मतलब के लिए ढूँढते हैं मुझे।
बिना मतलब जो आए तो क्या बात है॥
कत्ल करके तो सब ले जाएँगे दिल मेरा।
कोई बातों से ले जाए तो क्या बात है॥
जिंदा रहने तक तो खुशी दूँगा ही सबको।
किसी को मेरी मौत पे खुशी मिल जाए तो क्या बात है॥
किताबों के पन्ने पलटकर सोचता हूँ....

यदि हम अपने काम में लगे रहे तो हम जो चाहें वो कर सकते हैं।

—हेलेन केलर

खुद वो बदलाव बनिए जो दुनिया में आप देखना चाहते हैं।

—महात्मा गाँधी

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं।

—शिव खेड़ा

विपरीत परिस्थितियों में कुछ लोग टूट जाते हैं, तो कुछ लोग रिकॉड तोड़ते हैं।

—शिव खेड़ा

असफलता केवल यह सिद्ध करती है प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

पापा

शिवानी
बी.ए. तृतीय वर्ष

एक दिन बड़े गुस्से से मैं घर से चल दिया। इतना गुस्सा था कि गलती से पापा के ही जूते पहन के निकल गया, सोचा मैं आज बस घर छोड़ दूँगा, और तभी लौटूँगा जब बहुत बड़ाआदमी बन जाऊँगा। जब मोटर साइकिल नहीं दिलवा सकते थे, तो क्यूँ इंजीनियर बनाने के सपने देखते हैं। आज मैं पापा का पर्स भी उठा लाया था। जिसे किसी को हाथ तक न लगाने देते थे। मुझे पता है इस पर्स में जरुर पैसों के हिसाब की डायरी होगी। पता तो चले कितना माल छुपाया है, माँ से भी। इसीलिए हाथ नहीं लगाने देते किसी को। जैसे ही मैं कच्चे रास्ते से सड़क पर आया मुझे लगा जूतों में कुछ चुभ रहा है। मैंने जूता निकाला तो मेरी एड़ी से थोड़ा–सा खून निकल रहा था। जूते में कोई कील निकली थी दर्द तो हुआ पर गुस्सा बहुत था। और मुझे जाना ही था घर छोड़कर। जैसे ही कुछ दूर चला और कुछ दूरी पर मुझे पाँवों में गीला लगा। सड़क पर पानी बिखरा पड़ा था। पाँव उठाके देखा तो जूते का तला टूटा था। जैसे–तैसे लंगड़ाकर बस स्टॉप पहुँचा, पता चला एक घण्टे तक कोई बस नहीं थी। मैंने सोचा क्यों न पर्स की तलाशी ली जाए, मैंने पर्स खोला, एक पर्ची दिखाई दी जिसमें लिखा था:– लैपटॉप के लिए 40 हजार उधार लिए पर लैपटॉप तो घर में मेरे पास है, दूसरा एक मुड़ा हुआ पन्ना देखा, उसमें उनके ऑफिस की हॉबी डे का लिखा था उन्होंने हॉबी लिखी अच्छे जूते पहनना ओह... अच्छा जूते पहना। पर उनके जूते तो....।

माँ पिछले चार महीने से हर पहली को कहती हैं नए जूते ले लो। और वे हर बार कहते "अभी तो 6 महीने जूते और चलेंगे।"।

तीसरी पर्ची:– पुराना स्कूटर दीजिए एक्सचेंज में नयी मोटर साइकिल ले जाइये। पढ़ते ही दिमाग घूम गया ओह नहीं मैं घर की ओर भागा अब पावों में वो कील नहीं चुभ रही थी। मैं घर पहुँचा, न पापा घर पर थे न स्कूटर ओह नहीं मैं समझ गया। मैं एजेंसी पर पहुँचा पापा वहीं थे मैंने उनको गले लगा लिया और रोने लगा, नहीं पापा मुझे नहीं चाहिए मोटर साइकिल। बस आप अपने नये जूते ले लो। और मुझे अब बड़ा आदमी बनना है... वो भी आपके तरीके से। माँ एक ऐसी बैंक है जहाँ आप हर भावना और दु:ख जमा कर सकते हैं ..... और पापा एक ऐसा क्रेडिट कार्ड है जिनके पास बैलेंस न होते हुए भी हमारे सपने पूरे करने की कोशिश करते हैं...

कोई व्यक्ति अपने कार्यों से महान होता है, अपने जन्म से नहीं।

—चाणक्य

भारतीय नारी का स्वरूप

विशाल
एम.ए. प्रथम वर्ष

संस्कृति की वाहक नारी,
कुटुम्ब का आधार है।
युग–युग का निर्माण है करती,
परिवर्तन का सार है।
विद्या का विस्तार है नारी,
शक्ति की हुंकार है।
सम्पन्नता हैं जिसके हाथों,
उन्नति का पर्याय है।
सावित्री जैसा साहस जिसमें,
मीरा जैस प्रेम है।
जीजा जैसी वीरता, और
गार्गी जैसा ज्ञान है।
आभूषण की धारक नारी,
सौम्यता और वीरता के,
तेज ओज वात्सल्य जैसे
संस्कारों की पोषक नारी।
नैतिकता की जननी नारी,
दो कुल की उद्धारक है।
धैर्यवान वह सन्तोषी है,
कृति है प्रकृति की।
शास्त्रों की देवी है वो,
इतिहास की वीरांगना है।
साहित्य की नायिका बनी,
संगीत की साधिका है।
स्थिति ने बदला उसे
सबला से अबला तक।
तो अबला से सबला तक,
स्वयं स्थापित हुई है नारी।

कार्य ही सफलता की बुनियाद है।

—पाब्लो पिकासो

असफलता से सफलता का सृजन कीजिये, निराशा और असफलता, सफलता के दो निश्चित आधार स्तम्भ हैं।

—डेल कार्नेगी

बेटी

सोनिया
बी.एस-सी प्रथम वर्ष

जब जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आंगन की चिड़िया है बेटी॥
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी।
नये–नये रिश्ते बनाती है बेटी॥
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी।
बार–बार याद आती है बेटी॥
बेटी की कीमत उनसे पूछो।
जिनके पास नहीं है बेटी॥

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका

नसरीन
एम.एस-सी. द्वितीय वर्ष

प्रस्तावना :– "नारियों की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर करती है।"– अरस्तु

"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता" – मनु

भारत में संविधान द्वारा सभी को सामान अधिकार दिया गया है। परन्तु कुछ वर्ग अभी भी अपने मौलिक अधिकारों के प्रति जागरुक नहीं है। संविधान में सभी को समान अधिकार दिया गया है, परन्तु सामाजिक तौर पर इसे पूर्ण रूपेण लागू नहीं किया जा सका, भारत में महिलाओं की स्थिति के लिये काफी आन्दोलन और जागरुकता फैलायी गयी परन्तु अभी भी उनकी स्थिति काफी संतुष्टजनक नहीं है। पौराणिक युग में महिलाओं की स्थिति को लेकर और उनकी साक्षरता को लेकर बहुत प्रयास किये गये, परन्तु कुछ पुरानी सामाजिक पाबंदियों के चलते उनकी स्थिति अभी भी कुछ संतोषजनक नहीं है।

- ★ हमारी वर्तमान 543 संसदीय लोकसभा में महिलाओं की संख्या मात्र 62 है जोकि लिंगानुपात के अनुरूप पुरुषों के आधी होनी चाहिए थी। स्पष्ट तौर पर महिलाओं की स्थिति के लिये भरसक प्रयास किया जा रहा है, परन्तु उनकी स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है।
- ★ भारत में महिलाओं की स्थिति और शिक्षा के लिये महिला–आरक्षण बिल–108वाँ संविधान संशोधन का पास होना जरुरी है। जिससे संसद में उनकी 33% हिस्सेदारी सुनिश्चत हो सके।
- ★ महिला शिक्षा को लेकर केन्द्र सरकार और कुछ संगठन मिलकर प्रयासरत हैं।
- ★ महिला साक्षरता दर भारत में 64.6% और पुरुष साक्षरता दर 81.3% जोकि स्पष्ट रूप से असंतुलित है और देश की उन्नति में महिलाओं की भूमिका अहम है और इसलिये सबसे महत्त्वपूर्ण उनकी शिक्षा है। महिला शिक्षित होने पर सक्षम है और वो हर पद पर अपनी योग्यता और भूमिका दिखा रही है फिर चाहे वाह डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, न्यायधीश, अधिवक्ता, पत्रकार, अभिनेत्री, वकील, खिलाड़ी, सैन्य अधिकारी कुछ भी हो वो हर पद पर अपनी शक्ति और योग्यता का प्रदर्शन कर रही है। इसलिये महिलाओं का साक्षर और शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। भारत सरकार द्वारा महिलाओं की शिक्षा के लिये बहुत सी योजना आरम्भ की गयी है।

भारत सरकार द्वारा महिलाओं की शिक्षा के लिये चलाये गयी योजनायें :–

- ★ सर्व शिक्षा अभियान

★ राष्ट्रीय महिला कोष

★ इंदिरा समृद्धि योजना

★ महिला समृद्धि योजना

★ बालिका समृद्धि योजना

★ महिला शक्ति केन्द्र

★ रोजगार तथा प्रशिक्षण के लिये व्यापक अभियान

★ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान

भारत सरकार द्वारा महिलाओं की शिक्षा और उनकी प्रगति के लिये और भी बहुत सी योजनायें चलायी गयी, परन्तु अभी भी भारत में लड़कियों का लिंगानुपात पुरुषों की अपेक्षा कम है।

★ सन् 1971 की जनगणना में प्रति एक हजार बालकों पर 930 बालिका थीं, और सन् 1991 की जनगणना में यह स्थिति और गम्भीर हो गयी और प्रति एक हजार बालकों पर 927 बालिका थीं। हाँलाकि 2011 की जनगणना में यह आँकड़ा बढ़कर 943 हो गया, लेकिन फिर भी यह संतोषजनक नहीं है।

Description (विवरण):– भारत में महिलाओं की शिक्षा के लिये बहुत से कार्यक्रम और योजनायें चलायी जा रही हैं, परन्तु कुछ मुख्य कारण और सामाजिक कुरीतियों की वजह से उनकी शिक्षा और प्रगति का स्तर अभी भी अधुरा और असंतोषजनक है। महिलाओं की शिक्षा और प्रगति के विषय पर कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य है, जो पौराणिक युग से आधुनिक युग तक चले आ रहे है।।

1. **वैदिक काल में महिला शिक्षा :–** वैदिक काल में महिला की स्थिति बहुत अच्छी थी, उनको पिता एवं गुरु समान आचार्य पद प्राप्त थे। वे पुरुषों के समान आश्रमों में रहकर शिक्षा ग्रहण करती थी।

गार्गी, मैत्रेयी, अहिल्या, अरुधंती आदि महिलायें अपने ज्ञान और यश से उस समय गौरवान्वित हैं, महर्षि वाल्मीकि और कण्व के आश्रमों में भी स्त्रियों के निवास के विवरण मिलते हैं। उस समय स्त्रियाँ अपने ज्ञान और शास्त्रार्थ से कुशल और सम्पन्न जीवन व्यतीत करती थीं। वह आश्रमों में रहकर पुरुषों के समान शिक्षा ग्रहण करती थीं। इसलिये महाभारत में लिखा गया था–

"गुरु चैव सर्वषा:, माता परमो गुरु:"

2. **मध्यकालीन में महिला शिक्षा :–** मध्यकाल में महिला शिक्षा की स्थिति बहुत खराब हो गयी और साथ में महिलाओं की भी। मुगल शासकों के आने के बाद महिलायें सिर्फ भोग–विलास का साधन बनकर रह

गयी। और उनके अस्तित्व और गरिमा पर संकट बन आया।

इसी काल में पर्दा प्रथा, सती प्रथा का आगमन हुआ। गुप्त जी ने अपनी कविता में इस मर्म को दर्शाया:–

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आँचल में है दूध, आँखों में पानी" – गुप्त जी

आधुनिक युग में महिला शिक्षा

विदेशी आगमन और उनके द्वारा चलायी गयी शिक्षा से महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ।

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव उनकी जीवन शैली पर पड़ा और उन्होंने शिक्षा के महत्व को समझा।

★ कुछ समाज सुधारक जैसे राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा का अन्त किया और महिलाओं की शिक्षा के लिये बहुत से आंदोलन किये, इनके अतिरिक्त महात्मा गाँधी, आचार्य विनोबा भावे, ईश्वर चंद विद्यासागर आदि ने भी महिला शिक्षा को लेकर बहुत जागरुकता फैलायी।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने प्रयत्नों से विधवा विवाह पुर्नधिनियम 1956 को महिलाओं के लिये लागू करवाया। आँकड़ों के अनुसार सॉफ्टवेयर इंड्रस्ट्री में 30% महिलायें कार्य करती हैं, वहीं 90% महिलायें गाँवों में कृषि करती हैं। इसी कारण ये सारी चीजें हैं जो अब तक महिलाओं की शिक्षा में अपनी भूमिका निभा रही है।

भारत सरकार द्वारा महिला शिक्षा के लिये चलायी गयी योजनायें:–

1. **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान:–** हरियाणा और जम्मू कश्मीर जैसे राज्यों में लड़कियों की कम जनसंख्या को देखते हुये, माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 22 जनवरी 2015 को इस योजना की शुरुआत हरियाणा से की, जिससे उनकी संख्या और शिक्षा की स्थिति को बेहतर किया जा सके।

   इसके अन्तर्गत:–

   1. स्कूलों में मैनजमेन्ट कमेटियों का गठन किया गया, जिससे बालिकाओं की भर्ती हो सके।
   2. शौचालयों का निर्माण
   3. बंद पड़े शौचालयों का पुनर्निर्माण
   4. कस्तूरबा गाँधी बालिका–स्कूल की शुरुआत
   5. पढ़ाई छोड़ चुकी लड़कियों के लिये
   6. माध्यमिक स्तर पर दाखिला के लिये अभियान

7. माध्यमिक और उच्चतर विद्यालयों में पढ़ने के लिये छात्रावास

2. **सर्व शिक्षा अभियान :–** यह अभियान अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा चलाया गया था।
   1. इसके अन्तर्गत 2002 तक सभी जिलों में शिक्षा पहुँचाना।
   2. 2003 तक सभी को 5 साल तक 6 से 14 वर्ष के बच्चों की शिक्षा अनिवार्य करना।
   3. 2007 तक सभी को 8 साल तक की शिक्षा अनिवार्य

3. **उज्जवल योजना :–** महिलाओं की तस्करी को रोकने के लिये चलाया गया अभियान।

4. **महिला हैल्पलाइन योजना :–** महिलाओं के लिये 24 घंटे महिला हैल्पलाइन योजना की शुरुआत की गयी।10ए 1090 पर कॉल करके महिला अपनी समस्या सम्बन्धित विभाग को बता सकती है।

5. **महिला शक्ति केन्द्र :–** गाँवों में महिलाओं को जागरुक करने के लिये महिला शक्ति केन्द्र बनाया गया।

6. **स्पोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्प्लायमेंट प्रोग्राम (STEP) :–** महिलाओं के प्रशिक्षण के लिये चलाया गया अभियान जिससे उनको रोजगार उपलब्ध हो।

7. **पंचायती राज संस्थानों में आरक्षण :–** 2009 में भारत सरकार ने पंचायती राज संस्थानों में महिला आरक्षण की शुरुआत की।जिससे 50% महिला ग्राम पंचायत अध्यक्ष चुनी गयीं।

महिला शिक्षा में आने वाली बाधायें

1. **सामाजिक मापदण्ड :–** घर से बाहर निकलने की आजादी नहीं होती है।

2. **लैंगिक भेदभाव :–** महिलाओं को सदैव पुरुषों की अपेक्षा कमतर माना जाता है।

3. **बाल–विवाह :–** 2018 की एक रिपोर्ट के अनुसार (UNISCEF) यूनीसेफ ने बताया, भारत में 15 लाख लड़कियों की शादी 18 वर्ष से पहले कर दी जाती है।

4. माता–पिता की खराब आर्थिक स्थिति।

5. कुपोषण

6. कार्यस्थल पर यौन–उत्पीड़न

7. दहेज, ऑनर किलिंग जैसे महिला अपराध

8. सामाजिक पाबंदी

9. उच्चतर शिक्षा के लिये अनुमति न मिलना

संविधान द्वारा दिये गये अधिकार

भारत के संविधान में महिलाओं और पुरुषों को (अनुच्छेद 14 और 15) में समान अधिकार की गारण्टी दी गयी है।

1956 में हिन्दू उत्तराधिकारी अधिनियम में समान उत्तराधिकारी बनाया गया है दोनों को। और अन्य अधिकार:–

1. एक बराबर पारिश्रमिक एक्ट 1976
2. दहेज विरोधी अधिनियम 1961
3. लैंगिक पहचान रोकथाम एवं तकनीक एक्ट (1994)
4. कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकथाम एक्ट (2013)
5. बाल विवाह रोकथाम एक्ट (2006)
6. एक समान भुगतान एक्ट (1987)

कुछ महत्त्वपूर्ण महिलायें, जिन्होंने महिला सशक्तिकरण में मुख्य भूमिका निभायें :–

प्रेमा माथुर– पहली कॉर्मेशियल पॉयलट, हिमा दास, पी.वी. सिंधु, श्वेता सिंह (आज तक), रूबीना लियाकत (SBP) पत्रकार, इंदिरा गाँधी, प्रतिभा पॉटिल, कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, सायना नेहवाल, मैरी कॉम, आंनदी बाई जोशी, होमी व्यारवाला, प्रियंका चोपड़ा, फातिमका बेगम, पी.टी. ऊषा।

महिलाओं की शिक्षा के लिये हमें किन प्रयासों की आवश्यकता है:–

1. सबसे पहले महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। निर्भया उन्नाव और मध्य प्रदेश जैसी घटनाओं और Acid Attack पीड़ितों के लिये फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुनवाई होनी चाहिये।
2. घर में उनको जो लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है, उसे दूर करना होगा।
3. उनको संगठित और उनके अस्तित्व की महत्ता समझानी होगी।

उपसंहार :– पंडित जवाहर लाल नेहरु का मत है कि राष्ट्र की प्रगति के लिये महिलाओं का जागृत होना बहुत जरुरी है।

रिचर थॉमसन की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत G 20 सम्मेलन में महिलाओं के लिये 4वाँ सबसे असुरक्षित देश है। इसी अवधारणा को बदलना है, उनकी सुरक्षा और शिक्षा दोनों को व्यवस्थित करना होगा। इसके लिये उन्हें खुद के अस्तित्व को समझना होगा। देश की प्रगति उनकी प्रगति के बिना सम्भव नहीं है।

पापा की परी

अंजली रोयल
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

क्या कहूँ तेरी तारीफ में,
शब्द कम पड़ जाते हैं।
कैसे ब्याँ करुँ तुझे,
शब्दों पर एहसास भारी पड़ जाते हैं।
छोटी सी थी मैं जब लिया गोद तूने,
हर तमन्ना की पूरी मेरी,
और सपनों को हकीकत में बदला तूने,
कुछ भी हुआ मुझे,
मुझसे ज्यादा दर्द हुआ तुझे,
अंजली अपनी ही दुनिया में रहती है,
और खुद को पापा की परी कहती है॥

पावन पर्व हमारा

अनुज कुमार
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष

आया दिन आजादी का, यह पावन पर्व हुआ है।
आगत स्वागत पन्द्रह अगस्त, सौ–सौ बार तुम्हारा है।
युग–युग तक उड़ेंगे तिरेंगे इस उन्मुक्त गगन में,
माँ का श्रृंगार तुम्हीं हो, फहरों उन्मुक्त पवन में।
बलिदानों से जिनके यह आज तिरंगा लहराया,
बल–पौरुष से जिनके यह पावन पन्द्रह अगस्त आया।
श्रद्धा–सुमन समर्पित उनके श्री चरणों में करते हैं।
तेरी बलि–वेदी पर अपना शीश समर्पित करते हैं।
और तुम्हें विश्वास दे, आशीष ऐसा माँग रहे हैं।
आया दिन आजादी का, यह पावन पर्व हमारा है।
आगत–स्वागत पन्द्रह अगस्त, सौ–सौ बार तुम्हारा है।

साथ आने से शुरूआत होती हैं; साथ रहने से प्रगति होती हैं; और साथ काम करने से सफलता मिलती है।

–हेनरी फोर्ड

भारतीय एकता के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आधार

विशाल

वरिष्ठ स्वयं सेवक राष्ट्रीय सेवा योजना

भारतवर्ष विश्व की प्राचीनतम सभ्यता वाला राष्ट्र है। इसका ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आधार गौरवशाली एवं जिज्ञासा पूर्ण है। अपने प्राचीनतम ज्ञान–विज्ञान एवं शिक्षा ने इसे विश्वगुरु की उपाधि से अलंकृत किया है। समृद्धशाली इतिहास ने इसे सोने की चिड़िया की संज्ञा भी दी। अगर हम इसकी एकता की बात करें तो स्वयं हमारे वेद एवं शास्त्रों ने इसकी भौगोलिक सीमाएँ तय की हैं। विष्णु–पुराण कहता है:–

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तद् भारतनामा, भारती यत्र सन्तति॥

उक्त श्लोक में हिमालय से लेकर समुद्र तक के भू–भाग को भारत कहा गया तथा इसकी प्रजा को भारतीय कहा गया। ऐसी भौगोलिक स्थिति मानो प्रकृति ने ही एक रक्षात्मक दुर्ग की स्थापना की हो।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी भारतीय एकता का आधार प्राचीन काल से ही राजाओं एवं वंशों द्वारा अपनी कीर्ति में वृद्धि हेतु महत्त्वाकांक्षी एवं साम्राज्य विस्तार में संलग्न होने से ज्ञात होता है। अश्वमेध व राजसूय यज्ञों के बाद एवं स्वयं चाणक्य ने कहा हिमालय से समुद्र तक विस्तृत राज्य का राजा सम्राट होगा। इन्हीं के चलते चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक महान, समुद्रगुप्त, हर्ष आदि राजाओं ने भारत को राजनीतिक तौर पर संगठित किया। मध्यकाल से ब्रिटिश भारत तक जो भारत राज्यों में विभक्त था उसे अखण्ड भारत स्वतन्त्रता के पश्चात् सरदार पटेल के प्रयासों ने बनाया।

भारत का सम्पूर्ण इतिहास विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों का रहा। भारत में यूनानी, शक, कुषाण, हूण, अरब, तुर्क एवं मुगल आदि विदेशियों ने प्रवेश किया। ये बाहरी शक्तियाँ अपने साथ अपनी भिन्न–भिन्न सभ्यता एवं संस्कृति भी लाए। किन्तु शनैः–शनैः ये सभी संस्कृतियाँ भारतीय संस्कृति में सम्मिलित हो गईं। वास्तव में यही सांस्कृतिक एकता जो विविधता से पूर्ण है भारतीय एकता का मूलाधार है।

भारतीय एकता का एक आधार धार्मिक एकता भी है। भारत विश्व के चार प्रमुख धर्मों सनातन वैदिक (हिन्दू) जैन, बौद्ध एवं सिक्ख की जन्म स्थली है। इनमें से तीन अन्य धर्मों को सनातन की शाखा ही माना गया। तीन अन्य प्रमुख धर्मों इस्लाम, ईसाई एवं पारसी भी भारतीय रंग में रंगे हुए हैं। सभी की भारतीय संस्कृति से घनिष्ठता है। सभी की वेशभूषा, परम्पराएँ, भोजन, भाषा आदि संयुक्त रूप से भारतीय संस्कृति का निर्माण करते हैं।

प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति वाले भारतवर्ष की एकता का निर्माण किया हमारे शास्त्रों ने, हमारे गौरवशाली इतिहास एवं विविधता से पूर्ण इस चिरस्थायी संस्कृति ने। स्वतन्त्रता पश्चात् भारतीय लोगों में जो एक भारत का स्वप्न था उसने भारतीय एकता की नींव को मजबूत किया। इसकी एकता एवं स्थायित्व के सन्दर्भों में प्रसिद्ध उर्दू शायर इकबाल ने लिखा:–

यूनानों मिस्र रोमां सब मिट गए जहाँ से....
... कुछ बात हैं कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

भारतीय एकता का आधार बहुआयामी है। इसमें संस्कृति की विविधता, धर्म, भाषा, परम्पराएँ एवं राजनीति आदि प्रमुख तत्त्व हैं। फिर भी हम प्रथम एवं अन्तिम भारतीय ही हैं। यही एक मात्र विचार भारत को अखण्ड बनाता है।

सच्चा साथी

सूरज
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष

कहीं देखा है तुमने उसे,
जो मुझे सताया करता था।
जब भी उदास होती थी मैं,
मुझे हँसाया करता था।
एक प्यार भरा रिश्ता था वो मेरा
जो मुझे अब भी याद आता है।
खो गया वक्त के भँवर में कहीं,
जो हर पल मेरे साथ होता था।
आज एक अजनबी की तरह हाथ मिलाता है।
जो छोटी से छोटी बात मुझे बताया करता था।
कहीं मिलें वो किसी मोड़ पर,
तो उसे मेरा संदेशा देना,
कोई है जो आज भी उसका इंतजार कर रहा है।
जिसे वो मेरा सच्चा साथी बोला करता था।

पूरे विश्वास के साथ अपने सपनों की तरफ बढ़ो, वही जिंदगी जियो जिसकी कल्पना आपने की है।

–हेनरी डेविड थोरेयू

अध्यापक

तुषार गोयल
बी.ए. प्रथम वर्ष

किसी भी छात्र या बच्चे के जीवन में माँ और पिता के बाद सबसे अहम् स्थान उनके अध्यापक का होता है। वे उन्हें सही गलत में अन्तर करना सिखाते हैं। वे हमारे जीवन की शुरुआती शिक्षा देते हैं। जो कि हमें आगे चलकर बहुत काम आती है। हर साल हमारे भारत में टीचर्स डे 5 सितम्बर को मनाया जाता है। इस दिन का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि इस दिन भारत के महान पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस मनाया जाता है।

अपने अध्यापक के लिए कुछ पंक्तियाँ–

गुरु का महत्व कभी होगा न कम,
भले कर ले कितनी भी उन्नति हम।
वैसे तो इण्टरनेट पर हर प्रकार का ज्ञान है,
पर अच्छे–बुरे की नहीं पहचान उसे।
अज्ञानता को दूर करके ज्ञान की ज्योति जलाई है,
गुरुवर के चरणों में रहकर हमने शिक्षा पाई है,
गलत राह पर भटके जब हम,
तो गुरुवर ने राह दिखाई है,
गुमनामी के अंधेरे में था, पहचान बना दिया
दुनिया के गम से मुझे अनजान बना दिया
उनकी ऐसी हुई कृपा गुरु ने मुझे एक
अच्छा इन्सान बना दिया।

उड़ान

कृतिका सिंह
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

हर वक़्त अपनी सुबह खुशनुमा देखती हूँ,
मैं आने वाला कल भी आज देखती हूँ।
मैं तो मुझमें ही खुला आसमान देखती हूँ,
वो परिंदा जो खुले आसमान में उड़ रहा है,
मैं वो पंख अपने पास देखती हूँ।

सपना

कृतिका सिंह
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

हर सपना साकार नहीं होता,
हर सपने का आकार नहीं होता,
आँखों का इनसे कोई मेल नहीं,
सपनों का आँखों से आधार नहीं होता।

मैं भविष्य हूँ तुम्हारा

कृतिका सिंह
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

ऐ मेरे भारत,
मैं भविष्य हूँ तेरा,
मैं बेटी हूँ,
पर कम नहीं हूँ,
मैं हूँ दुनिया,
पर अमर नहीं हूँ।
मैं अबला नहीं,
मैं नींव हूँ,
मैं धरती हूँ,
आसमान भी मैं हूँ,
माता-पिता का अरमान भी मैं हूँ,
मैं सूरज सी जलती हूँ,
छिपती और निकलती हूँ,
मैं चन्दा सी हँसती हूँ....
मैं भविष्य हूँ तेरा,
मैं बेटी हूँ.....

निष्काम कर्म

अमन
बी.ए. तृतीय वर्ष

"कर्म ही सृष्टि का आधार है।"

कर्म ही जीवन का आधार है। कर्म ही सृष्टि का आधार है। कर्म के बिना जीवन की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। ऐसे में कर्म किए बिना कोई कैसे रह सकता है? स्वयं ईश्वर भी कर्म से रहित नहीं हो सकते। कर्म की बड़ी महिमा है, क्योंकि कर्म बंधन का कारण भी है और बंधन से मुक्ति का कारण भी। अशुभ कर्म बंधन का कारण है तो शुभ कर्म बंधन से मुक्ति का कारण है। सकाम कर्म बंधन का कारण है तो निष्काम कर्म बंधन से मुक्ति का कारण है। जाहिर है यदि हमें अपने जीवन में बंधनों से मुक्त रहना है, तो हमारे कर्म भी निष्काम होने चाहिए।

हम सदैव शुभ कार्य/कर्म, पुण्य कर्म तो करे ही, पर सिर्फ इतना ही पर्याप्त नहीं, क्योंकि कामना एवं आसक्ति के साथ किए गए पुण्य कर्म, शुभ कर्म भी अंततः हमारे लिए बंधन का ही कारण बनेगें, दुखों का ही कारण बनेंगे। तथागत गौतम बुद्ध जी कहते हैं:– "पाप–पुण्य, शुभ–अशुभ कुछ नहीं होता, लेकिन आप कोई भी कर्म ऐसा न करें, जिससे किसी भी प्राणी को तकलीफ न हो क्योंकि कर्म ही सबसे बड़ा धर्म है।"

कामना एवं आसक्तिपूर्ण कर्म भी हमारे आनंद में बाधक होंगे, हमारी मुक्ति एवं मोक्ष में बाधक होंगे और ईश्वरोपलब्धि में बाधक होंगे। इसलिए हमें शुभ कर्म करना है, पर कामनारहित होकर, अनासक्त होकर, कर्म में कर्तापन की भावना से मुक्त होकर, कर्म में सफलता मिले या असफलता उससे अविचलित होकर जीवन यापन करना होगा। हम सदैव ही व्यथित और व्याकुल रहते हैं, क्योंकि कर्म का परिणाम कभी हमारी आशा के अनुकूल आ सकता है और कभी प्रतिकूल भी। इसलिए हम आशा और निराशा से ऊपर उठकर उन दोनों स्थिति से मुक्त होकर स्थायी आनंद की अनुभूति कर सकेंगे। कभी भी अपने चित्त को विचलित न होने दें।

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं कि उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।

–अल्बर्ट आइंस्टीन

भारत माता

प्रियांशु शर्मा
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारत माता के प्रांगण में, सब पर्व मनाये जाते हैं।
परदेश से आये लोग यहाँ सीने से लगाये जाते हैं।
ये देश है उन महावीरों का जो इसके लिए कुर्बान हुये
डट जाते हैं सैनिक सीमा पर, हाथों में शस्त्र और प्राण लिए।
माँ के चरणों में पुष्प नहीं, यहाँ शीश चढ़ाये जाते हैं।
परदेश से आये लोग यहाँ सीने से लगाये जाते हैं।
गुरुद्वारा, गिरजाघर, मन्दिर–मस्जिद की बनी कतार यहाँ।
पूरब–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण में रहती सदा बहार यहाँ।
सभी धर्म जाति के उत्सव पर यहाँ साज बजाये जाते हैं।
हम कर्म करे, फल चाहे बिना गीता में प्रभु ने उपदेश दिया
जब जमीं पर पाप का बोझ बढ़ा, ईश्वर ने यहाँ अवतार लिया।
यहाँ प्रेम, अहिंसा, सेवा से मतभेद मिटाये जाते हैं,
परदेश से आये लोग यहाँ सीने से लगाये जाते हैं।

गुरु ज्ञान देते हैं....

प्रियांशु शर्मा
बी.ए. प्रथम वर्ष

लोग कहते हैं कि गुरु ज्ञान देते हैं,
शरीर होता है मगर प्राण देते हैं।
मैं मानता हूँ गुरु ज्ञान देते हैं,
ज्ञान के साथ बहुत कुछ दान देते हैं।
गुरु ही शिष्य को नई पहचान देते हैं!
गुरु के कारण ही लोग शिष्य को सम्मान देते हैं।
जीवन उजागर करने के लिए मार्ग देते हैं,
व्यक्तित्व बनाने के लिए संस्कार देते हैं।
जीवन होता है मगर जीने का अन्दाज देते हैं।
पंख होते हैं मगर उड़ने का आकाश देते हैं।
शरीर होता है मगर प्राण देते हैं।
गुरु ज्ञान देते हैं गुरु ज्ञान देते हैं!!

बचपन

नेहा
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष

वो बचपन आज याद आता है....
वो स्कूल ना जाने का बहाना
और जाने पर घंटों आँसू बहाना
वो पेंसिल का खो जाना
और दूसरों की रबड़ चुराना
आज याद आता है...
वो जरा सी बात पर झगड़ना
और गलतियों पर 'बेलन' पड़ना
वो धूप में साइकिल चलाना
और घर आकर बीमार पड़ जाना
आज याद आता है....

वो 'शक्तिमान' के लिए भाई से लड़ना
और खींचतान में रिमोट का टूटना
वो 'चाचा–चौधरी' की किताबें लाना
स्कूल छोड़ कॉमिक्स में ही लग जाना
आज याद आता है....
वो पैसे चुराकर वीडियो गेम जाना
बड़ी सी टीवी पर 'मॉरीओ' कूदना
वो दोस्तों संग मेला जाना
और कुल्हड़ की बर्फ को खाना
आज याद आता है....

अजन्मी बेटी का अपनी माँ के नाम पत्र

शिवानी
एम.ए. द्वितीय वर्ष

मेरी प्यारी माँ,

मैं खुश हूँ और भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि आप भी सुखी रहें। मैं यह पत्र इसलिए लिख रही हूँ, क्योंकि मैंने एक सनसनीखेज खबर सुनी है। जिसे सुनकर "मैं सिर से पाँव तक काँप उठी।" माँ, आपको मेरे कन्या होने का पता चला और आप मुझे मारने जा रही हो, अभी तो मैंने जन्म भी नहीं लिया और आप ऐसे कर रही हो। आप बस कह दीजिए, कि यह सब झूठ है। दरअसल, मैं यह सुनकर दहल–सी गई हूँ। मेरे तो हाथ भी इतने कोमल हैं कि इनसे डॉक्टर की क्लीनिक की तरफ जाते वक्त आप की चुन्नी को भी जोर से नहीं खींच सकती, ताकि आपको रोक लूँ। मेरी बाहें भी इतनी पतली और कमजोर हैं कि इन्हें आपके गले में डालकर लिपट भी नहीं सकती।

माँ, मुझे मारने के लिए आप जो दवा लेना चाहती हैं, वह मेरे नन्हें से शरीर को बहुत कष्ट देगी, मुझे बहुत दर्द होगा। आपको पता भी नहीं लगेगा माँ, कि वह दवाई आपके पेट में अन्दर मुझे कितनी बेरहमी से मार डालेगी। माँ, प्लीज... ऐसा मत करो, मुझे बचाओ, "वह दवा मुझे आपके शरीर से इस तरह फिसला देगी, जैसे गीले हाथों से साबुन फिसलती है।" भगवान के लिए ऐसा मत करो माँ, मुझे आपकी ममता भरी गोद में खेलना है, माँ मैं आपका ज्यादा खर्चा भी नहीं कराऊँगी, भाई के छोटे कपड़ों से तन ढक लूँगी। माँ, बस एक बार मुझे जीने का मौका तो दीजिए, माँ प्लीज.... बेटा होता तो आप पाल लेती, मुझमें क्या बुराई है। एक बेटे के लिए, कई मासूम बेटियों की बलि देना, कहाँ का न्याय है माँ..., आखिर यह महापाप क्यों माँ...? ऐसा मत कीजिए, मुझे मत मारिए।

नारी हैं हम नारी हैं

सोनी
एम.ए. प्रथम वर्ष

नारी हैं हम नारी हैं
जिसमें बस्ती दुनिया सारी है
माँ बेटी बहन मानो तो
खुश रहेगी हस्ती तुम्हारी।
जो ना जाने नारी का सम्मान
खुद ही करता है अपना अपमान
नारी को माने जो निर्बल
कभी भी जीवन में न हो सकेगा सफल
जो करे स्त्री मान पर प्रहार
दुर्गा बनकर करे वो उसका संहार
स्त्री के दम पर ही घर संसार जाये संभल।
माँ, बेटी, बहू, बहन न जाने
कितने इसके रूप निराले।
हम वो नहीं जो करे शिकायत
और छोटी सी बात को लेकर
हम किसी को रूसवा करें।
हम जानती हैं नारी होकर
हम किसी का सम्मान करें
जो देखे कोई दूर–दूर से
बुरी नजरों से घूर–घूर के
उनको ये समझाना है
पाठ सलीके का पढ़ाना है
स्त्री को जो कोई भी
पहचान न सका
सम्मान उसका धरा संभाल न सका
उसका हुआ पतन।
इतिहास है गवाह
जो करे नारी मान पर प्रहार
दुर्गा बनकर करे वो उसका संहार।
नारी हैं हम नारी हैं
जिसमें बसती दुनिया सारी है॥

जैसे ही भय आपके करीब आये, उस पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दीजिये।

—चाणक्य

शहीद वीरों का कर्ज

चीनू पाल
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

याद करो उन वीरों को
जिनकी सरहद पर जान गई।
करो याद उन राणाओं को
जिनकी इस रण में जान गई।

करो याद उन माताओं को
जिनके अपने प्रिय सुत खोये।
करो याद उन बहनों को
जो रक्षाबंधन पर रोई।

लहू बहाकर सीमाओं पर
अमन चैन का फूल खिलाया
अपने प्राणों की बलि देकर
भारत माँ का मान बढ़ाया।

सरहद पर मर मिटने वाले
अजर अमर सब हो जायेंगे।
मर कर भी हम इन वीरों का
कैसे कर्ज चुका पायेंगे।

शिक्षक का महत्त्व

अंकिता यादव
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

"जाग उठा है आज देश का हर सोया इन्सान।

अध्यापक की तरूवर छाया में बना है देश महान।"

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस देश के विद्वानों पर ही निर्भर है क्योंकि आज इस देश को ऐसे सच्चे व कर्मठ अध्यापकों की नितांत आवश्यकता है जो इस देश से भ्रष्टाचार रूपी अमावस्या के घोर अंधकार को मिटाकर सच्चाई, ईमानदारी एवं कर्मशीलता को उन्मुख करे।

वास्तव में अध्यापक का स्थान प्रत्येक युग में सबसे ऊपर पथ प्रदर्शक के रूप में रहा है। क्योंकि कहीं न कहीं वे ही भविष्य निर्माता, सामाजिक ज्ञान के प्रदाता और आध्यात्मिक ज्ञान के ज्ञाता होता है।

आज उसी के पढ़ाए हुए छात्र कुशल इंजीनियर, सफल डॉक्टर, सफल शिक्षक और महान नेता बनकर कारों एवं हवाई जहाजों से देश–विदेश में घूमते हैं। यह सब देखकर एक शिक्षक का सिर गर्व से ऊँचा हो उठता है।

तुलसीदास जी ने भी गुरु के महत्त्व पर कुछ इस प्रकार अपने विचार प्रकट करने का प्रयास किया है–

"बिना गुरु कृपा विवेक न होई।

राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।"

मेरे विचार से शिक्षक के महत्व पर निम्न पंक्तियाँ सार्थक हैं:–

शिक्षक है वह कल्पवृक्ष जो मनचाहा फल देता है।

जीवन का कठिन पथ जो प्रशस्त कर देता है।

शिक्षक पारस पत्थर है जो लोहा कंचन कर देता है।

भटक रहे उन हृदयों में ज्ञान ज्योति भर देता है।

गुरु वही जो हरि को पाने का सन्मार्ग बनाता है।

इसलिए तो गुरु हरि से पहले पूजा जाता है।

गुरु शिष्य परम्परा पावन है गौरवशाली है।

अरुणी एकलव्य की अब तक कीर्ति निराली है।

हिन्दी वर्णमाला का क्रमिक कवितामय आयोजन

आशुतोष कुमार उपाध्याय
सहायक प्रोफेसर

अ चानक,
आ कर मुझसे,
इ ठलाता हुआ पंछी बोला
ई श्वर ने मानव को तो–
उ त्तम ज्ञान–दान से तौला।
ऊ पर हो तुम सब जीवों में,
ऋ ष्य तुल्य अनमोल,
ए क अकेली जात अनोखी।
ऐ सी क्या मजबूरी तुमको–
ओ ट रहे होंठों की शोखी।
औ र सताकर कमज़ोरों को,
अं ग तुम्हारा खिल जाता है।
अ: तुम्हें क्या मिल जाता है?
क हा मैंने–कि कहो,
ख ग आज सम्पूर्ण,
ग र्व से कि– हर अभाव में भी,
घ र तुम्हारा बड़े मजे से,
च ल रहा है।
छो टी सी–टहनी के सिरे की
ज गह में, बिना किसी
झ गड़े के, ना ही किसी–
ट कराव के पूरा कुनबा पल रहा है।
ठ ौर यहीं है उसमें,
ड ाली–डाली, पत्ते–पत्ते;
ढ लता सूरज–
त रावट देता है।
थ कावट सारी, पूरे
दि वस की तारों की लड़ियों से
ध न–धान्य की लिखावट लेता है।
ना दान–नियति से अनजान अरे,
प्र गतिशील मानव,
फ़ रेब के पुतलो,
ब न बैठे हो समर्थ।
भ ला याद कहाँ तुम्हें,
म नुष्यता का अर्थ?
य ह जो भी, प्रभु की,
र चना अनुपम....
ला लच–लोभ के
व शीभूत होकर,
श र्म–धर्म सब तजकर।
ष ड्यंत्रों के खेतों में,
स दा पाप–बीजों को बोकर।
हो कर स्वयं से दूर–
क्ष णभंगुर सुख में अटक चुके हो।
त्रा स को आमंत्रित करते–
ज्ञा न–पथ से भटक चुके हो।

असम्भव कुछ नहीं

सुनील कुमार
नैत्यिक लिपिक

जीवन में बहुत से महत्वपूर्ण अवसर या अनेक ऐसी उपलब्धियाँ हाथ से निकल जाती हैं जिन्हें मनुष्य असंभव जानकर प्राप्त करने का प्रयास करता है। दूसरे अर्थों में किसी कार्य का असम्भव होना स्वयं को असमर्थ व असक्षम मानना है। जब हम किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए स्वयं को अपात्र, अयोग्य व अक्षम मानते हैं तो वह लक्ष्य हमें असम्भव प्रतीत होने लगता है। इसके विपरीत यदि असंभव को भी संभव मानकर हम साहस, धैर्य व प्रयास से काम लें तो अवश्य ही असम्भव को संभव कर दिखाने में सफल हो जाते हैं। ज्ञानियों व पुरुषार्थी व्यक्तियों के शब्दकोश में असभ्मव शब्द मिलता ही नहीं है। प्रख्यात योद्धा नेपोलियन का मानना था कि असंभव शब्द केवल मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है। संसार रूपी सागर में जीवन रूपी नाव का खेवनहार मन है। किसी विद्वान ने ठीक ही लिखा है "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"। सकारात्मक ज्ञानी व संघर्षशील व्यक्ति जीवन में केवल लक्ष्य प्राप्ति को ही देखता है। उसके लिए शेष सब गौण हो जाता है। जबकि कायर, पौरुषहीन व स्वयं से पराजित व्यक्ति को अपने लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में बाधाओं के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता।

संभव का मार्ग असंभव की संकरी व घुटनभरी गलियों से हाकर निकलता है। व्यक्ति का धैर्य, लक्ष्य प्राप्ति की दृढ़ता, संघर्ष क्षमता या श्रम का सही दिशा में सही समायोजन ही संभव तक का सफर तय करने के लिए मूलभूत उपकरण है। किसी बात का असंभव प्रतीत होना स्वयं पर अविश्वास का प्रतीक है। जीवन का कोई भी कार्य प्रथम दृष्टि में संभव नहीं होता। प्रमुख विचारक कार्लइल का कहना है कि प्रत्येक अच्छा कार्य, कार्य से पहले ही असंभव नजर आता है। बलवान व कर्मवीर पुरुष के लिए संभव ही अंतिम मंजिल है, जबकि बलहीन व दुर्बल व्यक्ति के लिए असंभव ही पहली सीढ़ी है। वस्तुतः अकर्मण्यशील पुरुषों को जीवन में असंभव के अतिरिक्त कुछ दिखता सूझता ही नहीं इसलिए वे निष्क्रिय हो जाने के लिए बाध्य होते हैं।

इतिहास

मीनू तेंवतिया
एम.ए. द्वितीय वर्ष

इतिहास तीन शब्दों इति+ह+आस् से मिलकर बना है।

जिसका अर्थ है–ऐसा निश्चित रूप से हुआ। इस प्रकार इतिहास अतीत को जानने का एक मात्र साधन है। किसी समाज या राष्ट्र के इतिहास के अध्ययन के द्वारा हम उस समाज या राष्ट्र के अतीत को जान सकते हैं। यहाँ अतीत से हमारा तात्पर्य उस राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता से है। प्रत्येक देश अथवा राष्ट्र की अस्मिता की पहचान उसकी संस्कृति से होती है। संस्कृति के अन्तर्गत मानव के समस्त क्रियाकलाप आते हैं जबकि सभ्यता के अन्तर्गत उसके भौतिक पहलुओं पर विशेष जोर दिया जाता है। प्राचीन काल में भारत के विशाल उपमहाद्वीप को भारतवर्ष, अर्थात् भरतों की भूमि के नाम से जाना जाता था। विष्णु पुराण में उल्लिखित हैं– "समुद्र के उत्तर में तथा हिमालय के दक्षिण में जो स्थित है वह भारत देश है तथा वहाँ की संस्कृति भारतीय है।" इस देश का भारत नामकरण ऋग्वैदिक काल के प्रमुख जन भरत के नाम पर किया गया लगता है। भारत देश जम्बू द्वीप का दक्षिणी भाग था। सिन्धु द्वारा सिंचित प्रदेश को इण्डिया नाम सबसे पहले हरवामानी ईरानियों द्वारा दिया गया। पारसियों के पवित्र ग्रंथ 'जिन्द अवेस्ता' में सरस्वती की सात नदियों के क्षेत्र का उल्लेख करते हुए 'सप्तसैन्धव' शब्द का प्रयोग किया है। यूनानियों ने बाद में यह शब्द ईरानियों से उधार लेकर सिन्धु नदी को 'इन्डोस' के नाम से पुकारा।

उत्कृष्टता वो कला है जो प्रशिक्षण और आदत से आती है। हम इसलिए सही कार्य नहीं करते कि हमारे अन्दर अच्छाई या उत्कृष्टता है, बल्कि वो हमारे अन्दर इसलिए हैं क्योंकि हमने सही कार्य किया है। हम वो हैं जो हम बार बार करते हैं। इसलिए उत्कृष्टता कोई कार्य नहीं बल्कि एक आदत है।

—अरस्तु

जनसंख्या विस्फोट (कारण व निवारण)

शिवानी
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

जनसंख्या विस्फोट से तात्पर्य है, कि जनसंख्या का अनियमित रूप से बढ़ना एवं निरन्तर विस्फोट। भारत में मानव जनसंख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस विस्फोट (जनसंख्या वृद्धि) से लोगों को बहुत ही मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। पहले चीन की जनसंख्या सभी देशों में सर्वप्रथम थी परन्तु आज वो समय आ गया है कि भारत चीन को भी पीछे छोड़ सकता है।

कारण

जनसंख्या विस्फोट के अनेक कारण हैं। जिसके कारण जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है, कुछ कारण निम्नलिखित हैं:–

अशिक्षा :– अशिक्षित लोग (मनुष्य) जनसंख्या का मुख्य कारण है। शिक्षा समाज में एक अहम भूमिका निभाती है, गाँव में रहने वाले लोग तथा अधिकतर जो लोग अशिक्षित हैं, उन्हें यह ज्ञान नहीं होता कि जनसंख्या में वृद्धि होने से उन पर या हमारे समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है। लोग बहुत से ऐसे कार्य करते हैं, जिससे जनसंख्या प्रभावित होती है। अशिक्षित होने के कारण उन्हें गर्भनिरोधक यन्त्र व दवाईयों के बारे में भी ज्ञान नहीं होता, जिससे वह अनियमित रूप से बच्चों को जन्म देते है। जिससे जनसंख्या में वृद्धि होती है।

बाल विवाह :– बाल–विवाह हमारे समाज की एक बड़ी अज्ञानता है। आज भी कई ऐसे स्थान हैं, जहाँ पर लोग बच्चों का विवाह बहुत जल्दी कर देते हैं, जिससे उनमें समझदारी नहीं आ पाती है।

पुरातन–विचार का होना :– जनसंख्या में वृद्धि होने का कारण यह भी है, कि कुछ लोग आज भी यह धारणा रखते हैं कि "बच्चे भगवान की देन होते हैं।" इसके साथ–साथ लोगों का पुत्रों के प्रति ज्यादा प्रेम करना और पुत्री को कम प्रेम करना भी जनसंख्या में अनियमित वृद्धि करता है। कुछ लोगों का मानना यह है कि पुत्र ही परिवार के वंश को आगे बढ़ाता है, इसलिए वह पुत्र के लालच में अनेक बच्चों को जन्म देते हैं जिससे जनसंख्या की दर में वृद्धि होती है।

मनोरंजन के रूप में :– आज भी ऐसे बहुत से लोग हैं, जो केवल मनोरंजन के रूप में बच्चों को जन्म देते हैं, उन्हें बच्चों के पालन–पोषण की कोई परवाह नहीं होती।

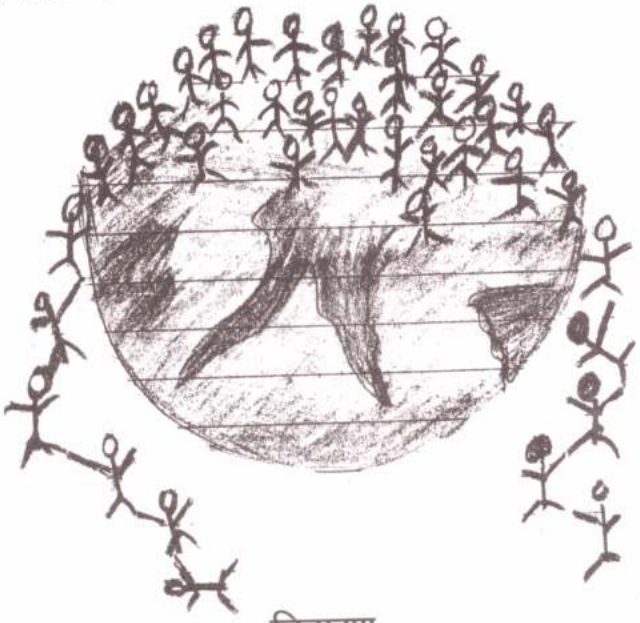

निवारण

जनसंख्या विस्फोट को जल्द से जल्द नियन्त्रित किया जाना चाहिए। बढ़ती जनसंख्या को

सन्तुलन में लाने के कुछ प्रयोग निम्नलिखित हैं–

शिक्षा की भूमिका :–बढ़ती हुई जनसंख्या में शिक्षा की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है लोगों का शिक्षित होना जरुरी है, शिक्षित मनुष्य ही राष्ट्र का ध्यान रख सकता है। आज के समय में महिलाओं का शिक्षित होना जरुरी है, क्योंकि जब वह शिक्षित होगी तभी वह अपने बच्चों को शिक्षा दे सकेगी और अपने परिवार को शिक्षित कर सकेगीं।

बाल–विवाह पर रोकथाम :–बाल–विवाह पर रोकथाम होना जरुरी है। बाल–विवाह जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ बच्चों की मानसिक व शारीरिक क्षमता को भी कमजोर करता है, इसलिए सरकार ने भी लड़कियों की विवाह की आयु 18 वर्ष तथा लड़कों की 21 वर्ष कर दी है। बाल–विवाह पर पाबंदी लगाना जरुरी है, अगर हम जनसंख्या रोकथाम व स्वस्थ भारत की कामना करते हैं, तो इस विषय पर काम करना होगा।

गाँव व शहरों में जिन लोगों को गर्भनिरोधक दवाइयों के बारे में ज्ञान नहीं है, उन्हें यह ज्ञान देना जरूरी है, जिससे उन्हें परिवार में सन्तुलन बनाए रखने का ज्ञान हो सके और वह अपने बच्चों का पालन–पोषण ठीक प्रकार से कर सके अपने बच्चे को शिक्षित कर सके।

सरकार द्वारा उठाए गए कुछ महत्त्वपूर्ण कदम

बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए भारत सरकार ने भी कई ऐसे कदम उठाए है जिससे इस गम्भीर समस्या को रोका जा सकता है:–

1. भारत सरकार ने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बहुत सारे सरकारी स्कूलों व कॉलेजों का निर्माण कराया है जिससे वह शिक्षित होकर इस गम्भीर समस्या का समाधान कर सके। साथ ही दूसरे लोगों को भी शिक्षित कर सकें।
2. अशिक्षित लोगों के लिए सरकार ने हर–जगह 'परिवार–योजना' के ऑफिस बनाए हैं जिससे उन्हें नि:शुल्क परिवार–नियोजन का ज्ञान हो सके।
3. भारत–सरकार की 'आशा' एक संस्था है, जो परिवार–नियोजन में सहायता प्रदान करती है, यह संस्था घर–घर जाकर गाँव व शहरों में गर्भनिरोधक दवाइयों को बाँटती है। जिससे लोग इसका इस्तेमाल करके अनियमित रूप से बच्चों को जन्म न दें।

सरकार ने कुछ योजना चलायी हैं, जो निरक्षर लोगों को यह ज्ञान देती है कि कम बच्चों को सब अधिक सुविधाएँ दे सकते हैं। कुछ योजना निम्न प्रकार हैं।

"छोटा–परिवार सुखी परिवार"

"हम दो, हमारे दो"

"परिवार–कल्याण योजना"

"कन्या–सुमंगला योजना"

यह कुछ योजनाएँ हैं, जो लोगों को यह ज्ञान देती हैं दो से अधिक बच्चों को जन्म न दें।

भारत सरकार को कदम उठाना चाहिए कि जो सरकारी कर्मचारी हैं, उनको केवल दो बच्चों की अनुमति दी जाए तथा लोगों को दो से अधिक बच्चों के होने पर उन्हें सरकारी सुविधाओं से वंचित किया जाए।

बेटी की चाह

नेहा
एम.ए. द्वितीय (हिन्दी)

थोड़ा तो सोच, मैं जीना चाहती हूँ
आपकी चुप्पी में हलचल पैदा करना चाहती हूँ।
थोड़ा तो सोच मैं जीना चाहती हूँ
लड़ने तो दे मैं लड़ना चाहती हूँ,
जिन ऊँचाई पर उड़ते हैं परिन्दे उन,
ऊँचाईयों को मैं छूना चाहती हूँ
थोड़ा तो सोच मैं लड़ना चाहती हूँ,
थोड़ा तो सोच मैं उड़ना चाहती हूँ॥
डरके नहीं खुलके निखरना चाहती हूँ
छुपाना मत मुझे इस अँधेरी दुनिया में,
इस अंधेरी दुनिया का उजाला बन सकती हूँ मैं,
थोड़ा तो सोच मैं जीना चाहती हूँ
थोड़ा तो सोच मैं उड़ना चाहती हूँ॥
बेटी की मन की चाह सुनाती हूँ कि
इस डर को ताकत बनने तो दे
इस खामोशी को शोर बनने तो दे
इस नाम की पहचान खुद–ब–खुद बन जायेगी
डर के नहीं खिल के निखरने तो दे
थोड़ा तो सोच मैं जीना चाहती हूँ॥

भारत में जनसंख्या वृद्धि : कारण और निवारण

स्नेहा त्यागी
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष

भारत का हर कोना, हर नुक्कड़, आबादी की अधिकता का जीता जागता उदाहरण है। चाहे आप कहीं भी हो, मैट्रो स्टेशन, हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन, सड़क हाईवे, बस स्टॉप, अस्पताल, शॉपिंग मॉल, बाजार, मंदिर या फिर कोई सामाजिक या धार्मिक समारोह, आप इन सब जगहों को दिन के किसी भी समय भीड़ से भरा देख सकते हैं। इससे साफ पता चलता है कि देश में जनसंख्या कितनी ज्यादा है।

भारत चीन के बाद दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है और विभिन्न अध्ययनों से यह पता चलता है कि सन् 2025 तक भारत चीन को भी पछाड़ देगा और विश्व का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन जाएगा।

जनसंख्या वृद्धि के कारण :–

भारत में आबादी बढ़ने के एक प्रमुख आम कारण है:–

★ जन्म दर का प्रतिशत मृत्यु दर से अधिक होना। हमने मृत्यु दर से प्रतिशत को तो सफलतापूर्वक कम कर दिया है पर यही कार्य जन्म दर के बारे में नहीं किया जा सकता।

★ जल्दी शादी होना और सार्वभौमिक विवाह प्रणाली:– वैसे तो कानूनी तौर पर लड़की की शादी की उम्र 18 वर्ष है, लेकिन जल्दी शादी की अवधारणा यहाँ बहुत प्रचलित है और जल्दी शादी करने से गर्भधारण करने की अवधि भी बढ़ जाती है।

★ गरीबी और निरक्षरता:– आबादी के तेजी से बढ़ने का एक अन्य कारण गरीबी भी है। गरीब परिवारों में एक धारणा है कि परिवार में जितने ज्यादा सदस्य होंगे उतने ज्यादा लोग कमाने वाले होंगे। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि बुढ़ापे में देखभाल करने के लिए भी बच्चों का होना जरुरी है। भारत अब भी जन्म नियंत्रण विधियों के इस्तेमाल में पीछे है।

★ पुराने सांस्कृतिक आदर्श:– भारत में बेटे परिवार में पैसे कमाने वाले माने जाते हैं। इस दकियानूसी सोच के चलते माता–पिता पर बेटा पैदा करने का दबाव बहुत बढ़ जाता है। जितने ज्यादा बेटे हों उतना और अच्छा।

★ अवैध प्रवासी:– सबसे आखिरी में हम इस तथ्य को भी नहीं नकार सकते कि बांग्लादेश, नेपाल से अवैध प्रवासियों की लगातार वृद्धि से जनसंख्या घनत्व में बढ़ोत्तरी हुई है।

★ भारत में जनसंख्या नियंत्रण के लिए कदम:–

भारत सरकार, नेताओं और नीति निर्माताओं को एक मजबूत जनसंख्या नीति बनाने के लिए पहल करनी चाहिए, जिससे देश की आर्थिक विकास दर को बढ़ती आबादी की माँग के साथ तालमेल कर बिठाया जा सके। आबादी पर नियंत्रण पाने के लिए जो बड़े कदम उठाए जा चुके हैं उन्हें और जोर देकर लागू करने की जरुरत है। महिलाओं और बच्चियों के कल्याण और उनकी स्थिति को बेहतर करना, शिक्षा के प्रसार, गर्भनिरोधक और परिवार नियोजन के तरीके, यौन शिक्षा, पुरुष नसबंदी को बढ़ावा और बच्चों के जन्म में अन्तर, गरीबों में गर्भनिरोधकों का मुफ्त वितरण, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा, गरीबों के लिए ज्यादा स्वास्थ्य सेवा केंद्र आदि कुछ ऐसे कदम हैं जो आबादी को काबू करने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

दुनिया में अलग–अलग क्षेत्रों में भारत की ताकत को नहीं नकारा जा सकता। चाहे वो विज्ञान और तकनीक हो, मेडिसिन और स्वास्थ्य सेवा हो, व्यापार और उद्योग हो, सेना हो, संचार हो, मंनोरंजन हो, साहित्य आदि कुछ भी हो। विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार द्वारा जन जागरुकता बढ़ाने और जनसंख्या नियंत्रण के कड़े मानदंड बनाने से देश की आबादी पर नियंत्रण पाया जा सकता है और इससे देश की आर्थिक स्थिति में भी सुधार किया जा सकता है।

ये सुन्दर देश हमारा

नीमा
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

मैं बंजारा, ले इकतारा, घूमा भारत सारा।
कहीं खड़े पर्वत बर्फीले,
कहीं रेत के ऊँचे टीले।
जंगल कहीं, कहीं हैं दल–दल,
कहीं झील, झरनों की कल–कल।
सागर कहीं हिलोरें लेता, कहीं नदी की धारा।
मैं बंजारा, ले इकतारा, घूमा भारत सारा॥
खड़े खेत–खलिहान कहीं पर,
हरे चाय–बागान कहीं पर।
फल–फलों से लदे बगीचे,
बँधे बाँध, खेतों को सीचें।
सुजल, सुफल धन–धान्यपूर्ण, सुन्दर देश हमारा,
मैं बंजारा, ले इकतारा, घूमा भारत सारा॥
भाषा अनेक, अनेक पहनावा,
फिर भी हम सबका एक है दावा।
कि हम सब भारतवासी एक हैं,
सबके धर्मों की शिक्षा नेक है।
चाहे नाम हों, मंदिर मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा।
मैं बंजारा ले इकतारा, घूमा भारत सारा॥

जीवन में किताबों का महत्त्व

सागर चौधरी
शोधार्थी (इतिहास वर्ग)

किताबें विद्यार्थी की सबसे अच्छी मित्र होती हैं, जो जीवन के सबसे कठिन समय में भी हमारा साथ देती हैं। वर्तमान समय में इन्टरनेट, फेसबुक तथा अन्य सोशल नेटवर्किंग साइटों ने छात्रों के मन मस्तिष्क पर ऐसा जाल फैला दिया है जो भविष्य में उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रूप से बहुत नुकसान पहुँचाएगी। समय की बचत के लिए इन सबका उपयोग बहुत जरुरी है लेकिन हद से ज्यादा निर्भरता बहुत गलत है क्योंकि जब से इन्टरनेट का इस्तेमाल ज्यादा होने लगा है तब से सभी वर्गों के लोगों में किताबों को पढ़ने की आदत धीरे–धीरे बहुत कम हो रही है।

किताबें पढ़ना क्यों है जरुरी :–आज की पीढ़ी के लिए किताबें सिर्फ परीक्षा पास करने के लिए ही होती है, जबकि किताबों से चरित्र निर्माण होता है जब कोई लेखक किताब लिखता है तो वह लगभग 1 या 2 साल उसके ऊपर शोध करता है तथा अन्य विद्वानों के द्वारा उसे प्रमाणित करने के पश्चात् ही उसे प्रकाशित करता है और वो ज्ञान हमें कुछ ही दिन में उस किताब को पढ़ने के बाद ही मिल जाता है।

किताबें व्यक्तित्व को निखारती हैं जिसकी हमें अपने जीवन में सबसे ज्यादा जरुरत होती है क्योंकि मौलिक ज्ञान की प्राप्ति हमें किताबों से ही प्राप्त हो सकती है। अच्छी किताबें हमारे जीवन को सरल बनाती हैं तथा हमारे मन से नकारात्मक विचार निकाल देती है मानसिक तनाव को दूर करती है, हमें अच्छा पाठक बनाती है। इसके विपरीत इन्टरनेट का ज्यादा उपयोग करके हम अपने को स्वाभाव से चिड़चिड़ा बना रहे हैं। सोशल साइट पर हमारे हजारों मित्र होते हैं लेकिन वास्तव में हम किसी से मिलना तक पसन्द नहीं करते।

अगर हम किसी भी महान व्यक्ति को पढ़े तो पता चलता है कि उसके जीवन पर किसी न किसी अच्छी पुस्तक का प्रभाव है। महात्मा गाँधी ने गीता का अध्ययन किया तथा उनके आदर्शों पर चलें। पुस्तकें अपना अमृतकोण सदा हम पर न्यौछावर करने को तैयार रहती है। पुस्तकें प्रेरणा का भण्डार होती हैं जिसके माध्यम से विद्यार्थी कठिन से कठिन लक्ष्य भी प्राप्त कर सकते हैं।

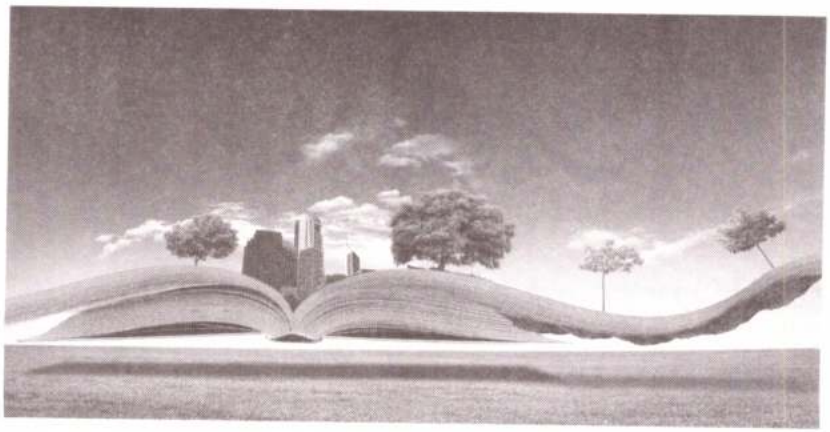

राधा, दादी और कल्पना

कपिल
बी.ए. तृतीय वर्ष

"राधा की कहानी, जो कल्पना से मुलाकात के बाद जीवन के लक्ष्य के प्रति और भी समर्पित हो गई।"

राधा स्कूल से लौटी, तो वह कुछ ज्यादा खुश थी। माँ ने पूछा, क्या बात है, आज इतनी खुश क्यों हो? राधा बोली, माँ आज मैं एक ऐसी लड़की से मिली, जो हू–ब–हू मेरी तरह थी। उसका नाम कल्पना था। वह स्पेस रिसर्चर है। माँ बोली, तू कब से स्पेस रिसर्चर बन गई? मैं भी बन जाऊँगी एक दिन। माँ बोली, सपना देखना बंद कर और जाकर अपना कमरा साफ कर। राधा कमरे में चली गई। दादी माँ उनकी बातें सुन रही थीं। उन्होंने राधा से पूछा, तुम किस स्पेस रिसर्चर के बारे में बात कर रही थी? राधा बोली, दादी, वह बिल्कुल मेरी जैसी है। वह विज्ञान में जो कुछ भी कक्षा में पढ़ती है, घर आकर उसका असल नमूना बनाकर समझने की कोशिश करती है, बिल्कुल मेरी तरह। दादी ने कहा, लेकिन बेटा, यह तो आजकल की हर लड़की करती है। फिर तुम्हें कैसे पता कि वह एकदम तुम्हारी सोच वाली ही है? राधा बोली, दादी माँ, याद है, एक बार कक्षा में टीचर ने पूछा था कि जाने क्यों आजकल के रिसर्चर इतनी रिसर्च करते चले जा रहे हैं। दादी बोली, हाँ, अच्छी तरह याद है। तुमने उनको अच्छे से जवाब भी तो दिया था, और फिर भी तुम्हें तीन दिन तक कक्षा से बाहर निकाल दिया गया था। राधा बोली, आज मैंने वही सवाल कल्पना से किया। उसने ठीक वही जवाब दिया, जो मैंने उस दिन दिया था। कल्पना ने कहा, क्योंकि हम कर सकते हैं एक यही तो चीज है, जो हमारे हाथ में है। जो कोशिश करते हैं, वही कुछ नया हासिल कर पाते हैं।

जरुरी नहीं कि कोई तारीफ करें, तभी आप सफल हैं। बस खुद पर विश्वास होना चाहिए।

यदि हार की कोई सम्भावना ना हो तो जीत का कोई अर्थ नहीं है।

–रोबेर्ट एच. स्कूलर

संवाद

अरुण कुमार सिंह
(असि. प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग)

चाह है सुन्दर भविष्य बनाने की,
चाह है बेहतर कल के जीने की।
चाह है गंगा–जमुनी तहजीब को,
पुनर्जीवित करने की।
चाह है सबसे बड़े धर्म "मानव–धर्म" को,
आत्मसात करने की।
चाह है गाँधी के "स्वराज" की,
जहाँ हरेक व्यक्ति आत्मशासन कर सके।
चाह है मार्क्स के "साम्यवाद" की,
जहाँ 'वर्ग–संघर्ष' मिट जाए।
चाह है फुले, अम्बेडकर के
"जाति व्यवस्था" के उन्मूलन की,
जिससे ऊँच–नीच का दंभ मिट जाए।
लेकिन यह चाह केवल कपोल–कल्पना न रहे।
जरुरत है इस चाह को सृजन करने के लिए,
गाँधी के 'साध्य' और 'साधन' को पवित्र बनाने की।
मार्क्स के सर्वहारा में 'वर्ग–चेतना' जाग्रत करने की।
आज समय है भगत सिंह और आजाद के,
'इंकलाब' को जिंदाबाद करने की।
विवेकानन्द के 'उत्तिष्ठत जागृत' के,
ध्येय को हृदयंगम करने की।
जरुरत है लोहिया के 'रोटी तोड़ो–बेटी जोड़ो' की।
जरुरत है सुकरात जैसा सच के लिए,
जहर का प्याला पीने की।
और सबसे ज्यादा जरुरत है आज के जड़बद्ध 'वाद' (ism) से,
उबरकर इन विचारों में "संवाद" की।

निवेश, क्रिकेट और चिड़िया

प्रशान्त
बी.ए. द्वितीय वर्ष

"निवेश की कहानी, जिन्हें एक चिड़िया के बच्चे ने विश्वास करना सिखाया"

रोहन की क्रिकेट खेलने में विशेष रूचि थी। उसके पिता निवेश मजदूर थे। हर कोई निवेश से पूछता था, अपने बेटे के क्रिकेट के शौक पर इतना खर्च क्यों कर रहे हो? चूंकि रोहन पढ़ाई में अच्छा नहीं था, ऐसे में, सभी चाहते थे कि रोहन अपने पिता के काम में हाथ बँटाए। निवेश चुपचाप सबकी बातें सुन लिया करते थे। वह चाहते थे कि रोहन पढ़–लिखकर अच्छी नौकरी करे। पर रोहन को पढ़ाई में बिल्कुल भी रूचि नहीं थी। वह दो बार दसवीं में फेल हो गया था। एक दिन रोहन के शिक्षक ने निवेश को स्कूल में बुलाकर कहा कि रोहन को क्रिकेट में अपना कैरियर बनाने दें। निवेश को समझ में ही नहीं आया कि उन्हें क्या निर्णय लेना चाहिए। हांलाकि उन्हें पता था कि अगर रोहन अभी से नौकरी करने लगेगा, तो वह भी निवेश की तरह ही रह जाएगा। इससे बेहतर है कि रोहन को उसकी मर्जी का काम करने दिया जाए। एक दिन वह काम से घर लौट रहे थे, तो उन्हें एक पेड़ की ठंडी छाँव में कुछ देर बैठने का मन हुआ। उस पेड़ पर बहुत सारे पक्षी बैठे थे। वह पक्षियों को गौर से देखने लगे। उन्होंने देखा कि उनमें से एक बहुत छोटा–सा पक्षी है, जो शायद अभी उड़ना सीख ही रहा है। निवेश ने देखा कि वह अपनी माँ के पीछे–पीछे पेड़ की सबसे ऊँची शाखा पर पहुँच गया। माँ ने वहाँ अपने पंख फैलाए और उड़ गई। उसी पल नन्हें से पक्षी ने पेड़ से नीचे छलांग लगाई। उसके छलांग लगाने और पंख पसारने के बीच कुछ सैंकड़ों का ही अंतराल था। निवेश सोचने लगे कि जीवन में शायद यही वह अंतराल होता है, जिसमें हम खुद पर विश्वास करना सीखते हैं। अगले दिन निवेश ने रोहन को एक क्रिकेट अकादमी में भर्ती करवा दिया। उन्हें यकीन था कि रोहन एक दिन उनका नाम जरूर रोशन करेगा।

भरोसा ही वह कड़ी होती है, जो हमें हमारी सफलता से जोड़ती है।

इंतजार करना बंद करो, क्योंकि सही समय कभी नहीं आता।

–नेपोलियन हिल

वशिष्ठ, मेला और गुब्बारा

करन
बी.ए. तृतीय वर्ष

"यह वशिष्ठ की कहानी है, जिसे उसके पिता ने विशिष्ट बनने का राज बताया।"

शहर के बाहर एक बड़ा मैदान था, जिसमें मेला लगा हुआ था। वशिष्ठ अपने पिता के साथ मेला देखने गया था। वहाँ उसने झूला झूला और आइसक्रीम खाई। लौटते समय उसने दो गुब्बारे खरीदे। उसके लिए ये साधारण गुब्बारे नहीं थे। उसने इनका नाम भी रख दिया था। एक का नाम उड़न छू और दूसरे का नाम था चिपकू। घर आते समय कार में बैठा वह टकटकी लगाए यहीं देख रहा था कि एक गुब्बारा तो कार की छत पर चिपका हुआ था और दूसरा कार की सीट पर। उड़न छूँ गुब्बारा तो सुरक्षित था, क्योंकि वह ऊपर था, पर वशिष्ठ को नीचे वाले गुब्बारे पर ध्यान देना पड़ रहा था। कहीं कोई उस पर बैठकर उसका सत्यानाश न कर दे। खैर, सब घर पहुँच गए। कुछ देर बाद एक बात उसे समझ में नहीं आई कि एक गुब्बारा तो ऊपर उड़ता ही जा रहा है, जबकि दूसरा गुब्बारा बस वैसा ही है। इसको मैं मारता हूँ फिर भी यह नहीं उड़ता। इसको अगर मैं बार–बार उछालता हूँ फिर भी यह कुछ देर उड़कर नीचे आ जाता है। ऐसा क्यों पापा? पिता बोले, बेटा जो, गुब्बारा उड़ रहा है, उसमें हीलियम गैस भरी हुई है, जो बड़ी आसानी से गुब्बारे को ऊपर उड़ाती है और दूसरे गुब्बारे में साधारण हवा है जो फूँक मारने पर भी मिल जाती है, और गुब्बारे के अंदर–बाहर दोनों तरफ है, इसीलिए यह उड़ेगा नहीं। वशिष्ट बोला, समझ गया पापा। अगर ऊपर जाना है, तो अपने अंदर कुछ विशेष होना ही चाहिए। नहीं तो हम नीचे ही रह जाऐंगे।

सफल होने के लिए अपने अंदर के खास लक्षण को पहचानना होगा।

राजनीतिक हत्या

डॉ. सुधीर कुमार
(असि. प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग)

देश के भविष्य मरते रहे उचित इलाज के अभाव में,
हम इंसानियत खो बैठे कुछ नेताओं के प्रभाव में,
यहाँ नौनिहालों की लाशों पर लाशें गिरती रही, मगर
देश के प्रधान व्यस्त रहे अपने राजनीतिक दाव में ॥

बस वोट लेने आते हैं ये मतलबी नेता हमारे गाँव में,
जीतने के बाद आ जाता है बदलाव इनके स्वभाव में,
देकर मुआवजा महज चंद रुपयों का जान के बदले,
रगड़ेंगे नमक फिर से ये नामुराद गरीबों के घाव में ॥

चुनाव भर रहते हैं ये मतदाताओं की छाँव में,
सदन पहुँचते ही बात करने लगते हैं ये ताव में,
सैकड़ों घरों में मातम से आज भी चूल्हे नहीं जले, और
दिल्ली में बैठे बेशर्म खा रहे छप्पन भोग बड़े चाव में

परिश्रम सौभाग्य की जननी है।

—बेंजामिन फ्रैंकलिन

सोशल मीडिया में कैरियर

नवीन मित्तल
कम्प्यूटर एवं भौतिकी विभाग

सोशल मीडिया पर आजकल सब कुछ फटाफट वायरल हो जाता है। पल भर में इसे हजारों लाखों व्यूज और हिट्स मिल जाते हैं, और लाखों लोगों तक इनकी पहुँच हो जाती हैं। रोजाना हम सब वायरल होते बहुत से ऐसे वीडियो और पोस्ट देखते हैं, और यही सोशल मीडिया (फेसबुक, व्हाटसएप, ट्विटर और इंस्टाग्राम) की असली ताकत है। प्रत्येक तरह का कारोबार तेजी से ऑनलाइन होने के कारण कंपनियाँ अपने सेवा और उत्पादों के विज्ञापन के लिये आजकल सोशल साइट्स का भरपूर उपयोग करने लगी हैं। ताकि वे अधिक से अधिक लोगों तक अपने उत्पादों और सेवाओं को पहुँचाकर उसे तेजी से लोकप्रिय बना सकें जिससे उस सेवा या उत्पाद की बिक्री बढ़ सके।

कंपनियों द्वारा मार्केटिंग के लिये सोशल मीडिया पर जोर दिये जाने से इस क्षेत्र में कई ऐसे क्षेत्र उभर कर सामने आये हैं, जहाँ कैरियर के काफी अच्छे मौके हैं। इसमें सबसे डिमांडिंग फील्ड "सोशल मीडिया मैनेजर्स" का है।

इन दिनों कंपनियाँ अपने ब्रांड को प्रमोट करने के लिये सोशल मीडिया मैनेजर्स को आकर्षक पैकेज ऑफर कर रहे हैं। कंपनियाँ अपने प्रोडक्ट की लॉन्चिंग, कंज्यूमर के साथ संवाद स्थापित करने तथा रिसर्च जैसे कार्यों के लिये एक्सपर्ट की भर्ती सालाना 20–25 लाख तक के पैकेज पर कर रही है। फ्लिपकार्ट, अमेजन, स्नैपडील, सैमसंग, हॉटस्टार, गोदरेज, स्विगी इत्यादि–इत्यादि बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ और मीडिया मार्केटिंग में डिजिटल मार्केटिंग एजेंसीज, ई–कामर्स कंपनीज, रिटेल कंपनीज तथा सर्विस प्रोवाइडिंग कंपनीज में भी जॉब्स के काफी अवसर उपलब्ध हैं। डिमांड की तुलना में सप्लाई कम होने के कारण आजकल हर बड़ी कंपनी में डिजिटल मार्केटिंग के लिये डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर, ऑनलाइन मार्केटिंग मैनेजर, एसईओ मार्केटिंग स्ट्रेटेजिस्ट, एसईओ मैनेजर तथा एसईओ एनालिस्ट जैसे पेशेवरों की खूब माँग है।

इस फील्ड के तहत सोशल मीडिया ऑप्टिमाइलेशन और सोशल मीडिया मार्केटिंग में कई तरह के लोगों की बहुत ही डिमांड है जिसमें सोशल मीडिया मैनेजर, सोशल मीडिया एग्जीक्यूटिव, ग्राफिक डिजाइनर्स, वीडिया एडिटर्स तथा ऑनलाइन कंटेंट राइटर्स प्रमुख हैं।

पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया मैनेजर्स की भूमिका काफी बदल गयी है। शुरुआत में इन मैनेजर्स को केवल फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम तथा लिंक्डइन जैसे माध्यम पर ही ध्यान देना होता था लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब सोशल मीडिया मैनेजर या एग्जीक्यूटिव को कॉपी लिखने के साथ–साथ विजुअल और डिजाइन कैंपेन के लिये ग्राफिक डिजाइनर्स, कंटेंट राइटर्स और सोशल मीडिया हैंडलर्स के साथ मिलकर काम करना होता है। सोशल मीडिया पर मार्केटिंग कैम्पेन को ज्यादा प्रभावी बनाया जा सके इसके लिये वेबसाइट ट्रैफिक को मॉनीटर करना होता है। वीडियो या पोस्ट पर कितने व्यूज आये, कितने हिट्स आये और कितने लोगों ने शेयर किया, इन सब बातों की एनालिसिस करके अगले चरण की मार्केटिंग स्ट्रेटेजी तैयार करनी होती है तथा दूसरे सोशल साइट्स पर भी नजर रखनी होती है। इसके अलावा कंपनी का सोशल मीडिया एकाउंट भी यही पेशेवर हैंडल करते हैं। सोशल मीडिया मार्केटिंग फील्ड में आने के लिये आजकल बहुत तरह के ऑनलाइन व ऑफलाइन कोर्स उपलब्ध हैं। ये कोर्स 3 माह से लेकर 6 माह तक की अवधि के होते हैं। इन कोर्सों को करके आप सर्टिफाइड प्रोफेशनल्स बनकर किसी भी अच्छी कम्पनी में जॉब प्राप्त कर सकते हैं। अगर बैकग्रांउड की बात करें तो इसमें बी.सी.ए., एम.सी.ए. अथवा बी.टेक (आई.टी/सी.एस.) पास युवाओं की ज्यादा पूछ है। लेकिन चूँकि सोशल मीडिया से आजकल हर कोई वाकिफ है, इसलिये सोशल मीडिया मार्केटिंग के शॉर्ट टर्म कोर्स करके इन दिनों बी.एस–सी., बी.ए., बी.कॉम. पास युवा भी काफी सफल हो रहे है।। इसके अतिरिक्त मास कम्यूनिकेशन तथा ग्राफिक डिजाइन का कोर्स करने वाले लोगों के लिये यह एक उपयुक्त क्षेत्र साबित हो सकता है।

नीले पत्थर की कहानी

फरहीन
एम.एस-सी. प्रथम वर्ष

एक शहर में बहुत ज्ञानी, प्रतापी साधु महाराज आये हुए थे। बहुत से दीन दुःखी परेशान लोग उनके पास उनकी कृपा दृष्टि पाने हेतु आने लगे, ऐसा ही एक दीन दुःखी, गरीब आदमी उनके पास आया और साधु महाराज से बोला "महाराज मैं बहुत ही गरीब हूँ, मेरे ऊपर कर्जा भी है, मैं बहुत ही परेशान हूँ मुझ पर कुछ उपकार करें।"

साधु महाराज ने उसको एक नीला चमकीले रंग का पत्थर दिया और कहा "यह कीमती पत्थर है।" जाओ इसकी जितनी कीमत लगवा सको लगवा दो। वो आदमी वहाँ से चला गया और उसे बेचने के इरादे से अपनी जान पहचान वाले एक फल विक्रेता के पास गया और उस पत्थर को दिखाकर उसकी कीमत जाननी चाही। फल विक्रेता बोला, "मुझे लगता है ये नीला शीशा है, महात्मा ने तुम्हें ऐसे ही दे दिया है हाँ पर सुन्दर है मैं तुम्हें इसके 1000 रुपये दे दूँगा।" वह आदमी निराश होकर अन्य व्यक्ति के पास गया जो एक बर्तन का व्यापारी था।

नीला पत्थर देखने के बाद व्यापारी बोला "यह पत्थर कोई विशेष रत्न है मैं इसके तुमको 10000 रुपये दे दूँगा।"

उस आदमी ने उस पत्थर को अब एक सुनार को दिखाया सुनार ने उस पत्थर को ध्यान से देखा और बोला "यह काफी कीमती हैं इसके मैं तुमको 1,00,000 रुपये दे दूँगा।"

वो आदमी समझ गया यह बहुत अमूल्य है, उसने अब एक हीरे के व्यापारी को दिखाया। व्यापारी ने जब यह पत्थर देखा तो देखता ही रह गया, उसने इस पत्थर को माथे से लगाया और पूछा तुम यह कहाँ से लाये हो, यह तो अमूल्य है, यदि मैं पूरी सम्पत्ति बेच दूँ तो भी कीमत नहीं दे सकता।

कहानी की सीख

हम अपने आप को कैसे आँकते हैं क्या हम वो हैं जो दूसरे हमारे बारे में सोचते हैं। आपका जीवन अमूल्य है। कभी भी खुद को दूसरों के नकारात्मक विचारों से कम मत आँकिये।

अनमोल वचन

काजल कश्यप
एम.ए. द्वितीय वर्ष

1. क्रोध एक स्थिति है, जिसमें जीभ मन से अधिक तेजी से काम करती है।
2. क्रोध मूर्खता से शुरु होता है और पछतावें पर खत्म होता है।
3. क्रोध आने पर चिल्लाने के लिये ताकत नहीं चाहिए। परन्तु क्रोध जाने पर चुप रहने के लिए बहुत ताकत चाहिए।
4. क्रोध को पाले रखना गर्म कोयले को किसी और पर फेंकने की नीयत से पकड़े रहने के समान है इसमें आप ही जलते हैं।
5. क्रोध एक ऐसा तेजाब है, जो जिस चीज पे डाला जाता है उससे ज्यादा उस पात्र को नुकसान पहुँचाता है जिसमें वह रखा है।
6. पानी मर्यादा तोड़े तो विनाश और वाणी मर्यादा तोड़े तो सर्वनाश
7. मौन रहना ही क्रोध को वश में रखने का सबसे सटीक उपाय है।

ई०वी० रामास्वामी नायकर - एशिया का सुकरात

राजकुमार
(असि. प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग)

तमिलनाडु की सामाजिक और राजनीतिक बनावट पर ईवी रामास्वामी यानी पेरियार का असर कितना गहरा है, इसका एक अंदाजा इससे भी लग सकता है कि साम्यवाद से लेकर दलित आंदोलन, तमिल राष्ट्रवाद, तर्कवाद और नारीवाद तक हर धारा से जुड़े लोग उनका सम्मान करते हैं, सम्मान ही नहीं करते बल्कि उन्हें मार्गदर्शक के रूप में देखते हैं, उन्हें "एशिया का सुकरात" भी कहा जाता है।

एक धार्मिक हिंदू परिवार में पैदा हुए पेरियार धर्म के घनघोर विरोधी रहे, ब्राह्मणवाद और हिंदू धर्म की कुरीतियों पर उन्होंने छोटी उम्र से ही प्रहार करना शुरु कर दिया था। वे न मूर्ति पूजा को मानते थे, न ही वेदांत को और न ही बाकी हिंदू दर्शन में उनकी आस्था थी। उन्होंने न केवल धर्म ग्रंथों की होली जलाई बल्कि रावण को अपना नायक भी माना।

पेरियार महात्मा गाँधी के सिद्धांतों से प्रभावित होकर कांग्रेस में शामिल हुए थे, इसी दौरान उन्होंने 1924 में केरल में हुए वाइकोम सत्याग्रह में अपनी अहम् भूमिका निभाई। अब तक तमिलनाडू में उनका कद काफी ऊँचा हो चुका था। वाइकोम सत्याग्रह के बाद लोगों ने उन्हें 'वाइकोम वीरन' यानि 'वाइकोम का नायक' की उपाधि दी थी। यही वह दौर था जब कांग्रेस में ब्राह्मणों और कथित उच्च वर्ग से उनका टकराव बढ़ने लगा और उन्होंने पार्टी छोड़ दी।

बाद में पेरियार ने दलित–हरिजनों और महिलाओं के लिए 'सेल्फ रिस्पेक्ट' आंदोलन यानी आत्मसम्मान आंदोलन भी चलाया। माना जाता है कि इन आंदोलनों के चलते तमिल और दक्षिण भारत की एक बड़ी आबादी समाज सुधार की तरफ प्रेरित हुई थी। यह वजह है कि पेरियार को राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती और विनोबा भावे सरीखे समाज सुधारकों की पंक्ति में रखा जाता है। लेकिन इनसे अलग वे एक मंझे हुए राजनेता भी थे।

पेरियार की राजनीति :–

केरल का वाइकोम सत्याग्रह दलितों को यहाँ स्थित एक प्रतिष्ठित मंदिर में प्रवेश दिलाने और मंदिर तक जाती सड़कों पर उनकी आवाजाही का अधिकार दिलाने का आंदोलन था। महात्मा गाँधी के साथ और कई बड़े नेताओं ने इस आंदोलन को अपना समर्थन दिया था। पेरियार ने भी इस आंदोलन में अहम भूमिका निभायी थी और उन्हें इसके लिए जेल भी भेजा गया। आखिरकार यह आंदोलन सफल हुआ था।

इसके बाद पेरियार तमिलनाडु में नायक बन गए थे। वाइकोम सत्याग्रह ब्राह्मणवाद के

खिलाफ ही था और पेरियार खुद ब्राह्मणवाद के मुखर विरोधी थे। माना जाता है कि दक्षिण में उनकी तेजी से बढ़ती लोकप्रियता के चलते कांग्रेस में मौजूद ब्राह्मणों का एक बड़ा तबका खासा आहत था। उधर दूसरी तरफ पेरियार का मानना था कि वाइकोम सत्याग्रह में उनकी भूमिका दबाने की कोशिश की गई थी।

यहाँ पेरियार के कांग्रेस नेताओं से टकराव के लिए एक और घटना का जिक्र किया जा सकता है। उस समय तमिलनाडु के कुछ गुरुकुलों को कांग्रेस पार्टी वित्तीय मदद देती थी। यहाँ कई गुरुकुलों में ब्राह्मण और अन्य जाति के बच्चों को खाने–पीने की व्यवस्था अलग–अलग थी और खाने में भी गुणवत्ता का अंतर था। पेरियार इसके खिलाफ आवाज उठाना चाहते थे लेकिन पार्टी ने कभी इसको तवज्जो नहीं दी।

इसी क्रम में 1925 के दौरान पेरियार ने तमिलनाडु कांग्रेस के सामने पार्टी नेतृत्व में गैर–ब्राह्मणों को अधिक भागीदारी देने से जुड़ा एक प्रस्ताव रखा। लेकिन इसे पार्टी ने सिरे से खारिज कर दिया। इस घटना के बाद पेरियार ने खुलकर कांग्रेस से बगावत कर दी। उन्होंने उसी समय अपने समर्थकों के बीच ऐलान भी किया कि वे एक दिन राज्य से कांग्रेस का सूपड़ा साफ कर देंगे।

अपनी राजनीतिक आवाज को धार देने के लिए पेरियार ने 1938 में जस्टिस पार्टी का गठन किया, फिर 1944 में इसे भंग करके उन्होंने द्रविड मुनेत्र कडगम (डीएमके) बनाई। कांगेस को तमिलनाडु से बाहर करने का पेरियार का सपना 1968 में पूरा हुआ जब डीएमके ने पहली बार राज्य में सरकार बनाई।

पेरियार को अपने वकत से आगे का आदमी भी कहा जाता है। यह महिलाओं की स्वतत्रता को लेकर उनके विचारों से भी जाना जा सकता है। उन्होंने बाल विवाह खत्म करने, विधवा महिलाओं को दोबारा शादी का अधिकार देने, शादी को पवित्र बंधन की जगह साझेदारी के रूप में समझने जैसे तमाम मुद्दों पर अभियान चलाए। अपने भाषणों में वे लोगों से कहा करते थे कि वे कुछ भी सिर्फ इसलिए स्वीकार न करें कि उन्होंने वह बात कही है। पेरियार का कहना था, 'इस पर विचार करो, अगर तुम समझते हो कि इसे तुम स्वीकार सकते हो तभी इसे स्वीकार करो, अन्यथा इसे छोड़ दो।'

राष्ट्रीय सेवा योजना - व्यक्तित्व निखारने का एक मंच मैं नहीं आप

विशाल
स्वयं सेवक राष्ट्रीय सेवा योजना

"मैं नहीं आप" इस भावना के वृक्ष राष्ट्रीय सेवा योजना को गौरवमयी एवं स्वर्णिम 51 वर्ष हो चुके हैं और मैं इस गौरवमयी अभियान का गत 4 वर्षों से हिस्सा हूँ। महाविद्यालय में प्रवेश के साथ ही पूर्व कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मयंक मोहन के कहने पर मैंने इसे स्वीकार किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़ने के बाद से ही धीरे–धीरे मैंने इसके कार्यक्रमों को समझा। 2 वर्ष के सात दिवसीय विशेष शिविरों में मैंने प्रतिभाग किया। हमें मलिन बस्तियों और ग्रामीण क्षेत्रों में वहाँ के लोगों से संवाद करने का अवसर मिला वे एक आस लगाकर अपनी वास्तविक समस्याएँ हमें बताते और समाधान की एक आशा की किरण के रूप में हमें देखते थे। हम उन समस्याओं को लिखित में कार्यक्रम अधिकारियों को सौंपते थे। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, वृक्षारोपण, रक्तदान, अतिथि संवाद, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रमों ने हमारे व्यक्तित्व को निखार दिया।

सात दिवसीय विशेष शिविर के अनुभव अलग ही तरह के होते थे। हमें बस्तियों और गाँव में जाकर सर्वे का कार्य करना होता था। अलग–अलग प्रतियोगिताओं की तैयारियाँ करनी होती थीं। प्रातः कालीन प्रार्थना, योगासन, दोपहर भोजन, अतिथि व्याख्यान, दैनिक डायरी लेखन एवं कार्यक्रम अधिकारी स्वयंसेवक संवाद इन सभी दैनिक क्रियाकलापों ने हमें एक नवीन दृष्टिकोण दिया एवं हमारे सोचने और समझने की क्षमता को विकसित किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना में सम्मिलित होकर मुझे एक ऐसा मंच मिला जहाँ मेरा वास्तविक परिचय महाविद्यालय के संपूर्ण अंग से हुआ। क्योंकि मैं नया था और अपने विभागों को भी ढंग से नहीं जानता था। लेकिन राष्ट्रीय सेवा योजना में सम्मिलित होकर मैंने ना केवल अपने विभागों बल्कि अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, वनस्पति, गणित विभाग आदि के प्राध्यापकों का भी आशीर्वाद प्राप्त किया और उनका विशेष सानिध्य और स्नेह मुझे मिला किसी भी विशेष कार्यक्रम के लिए सदैव मुझे बुलाया जाना और कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा लगातार मेरा उत्साहवर्धन करना यह अपने आप में मेरे लिए महत्वपूर्ण था और उसके लिए मैं अपने आप को भाग्यशाली मानता हूँ।

राष्ट्रीय सेवा योजना के इस महान अभियान का हिस्सा बनकर एक विशेष व्यक्तित्व के साथ मैं लगातार आगे बढ़ रहा हूँ इसलिए मैं अपने सभी साथियों से जिनका नवीन प्रवेश हुआ है अपील करता हूँ वह सभी राष्ट्रीय सेवा योजना का हिस्सा बने और अपनी प्रतिभाओं को अवसर दें।

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में शपथ ग्रहण करते हुए प्रतिभागी

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

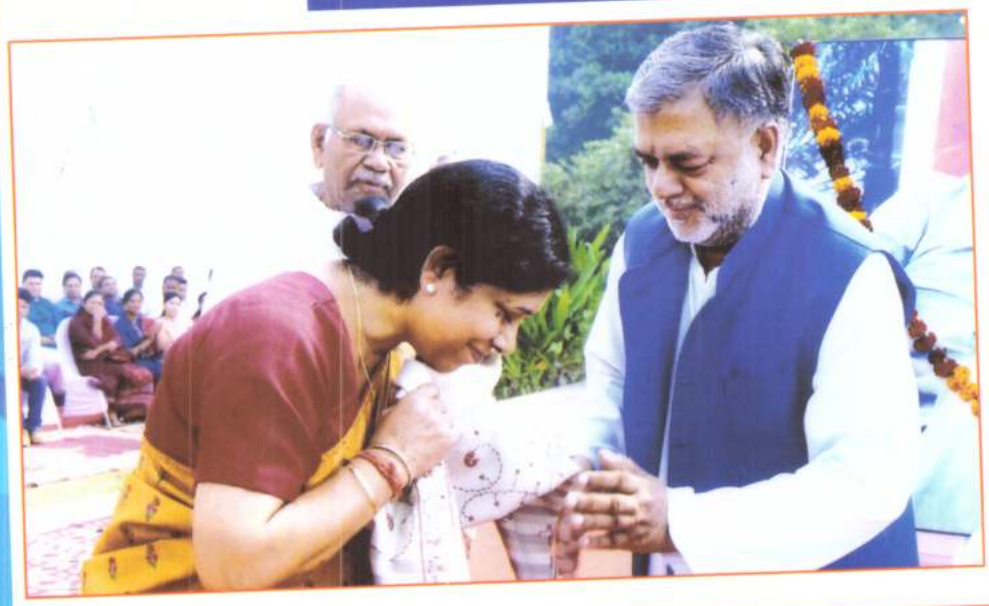

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

राष्ट्रीय संगोष्ठी में पोस्टर प्रस्तुति

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

28वें अन्तर्महाविद्यालय रोवर्स–रेंजर्स समागम में विभिन्न महाविद्यालयों की टीमों के शिविर

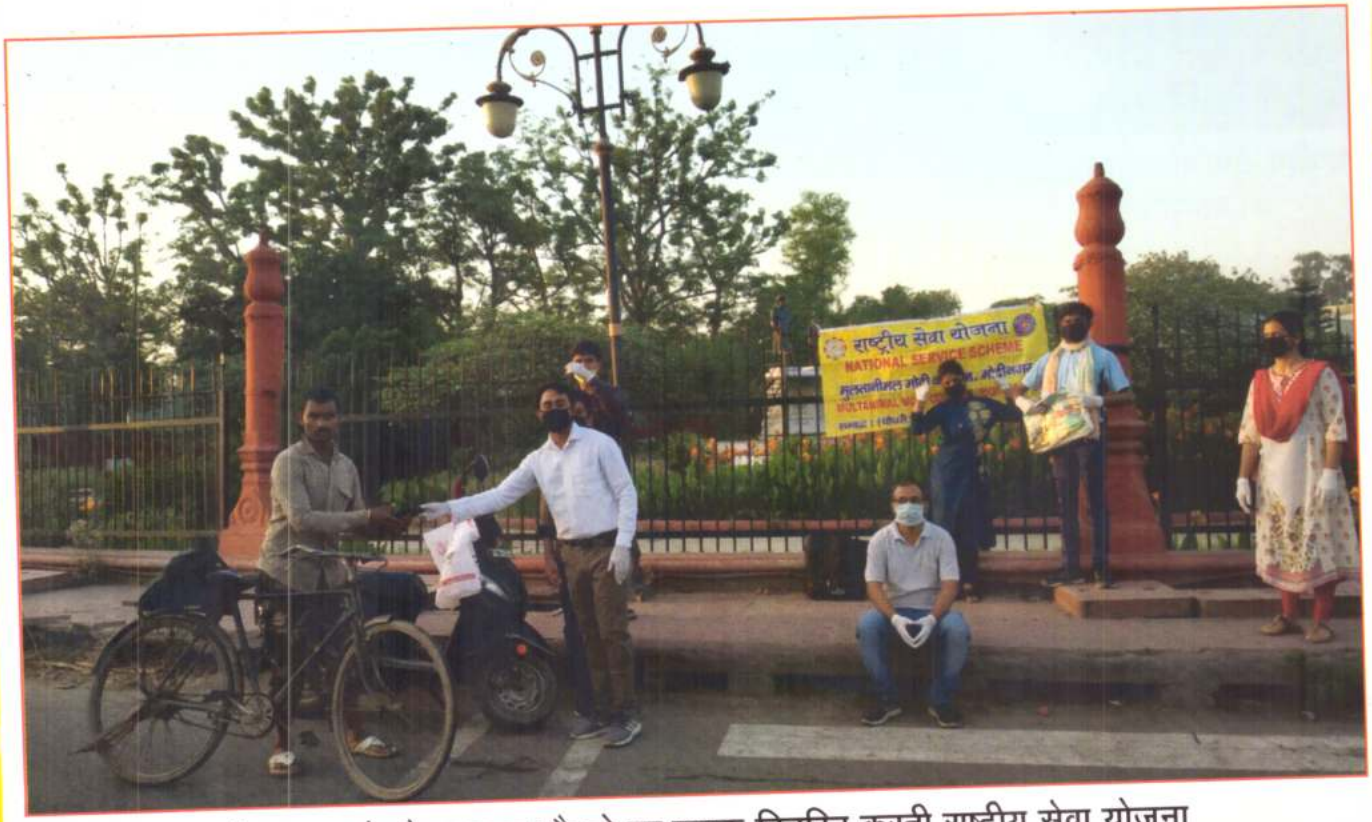

लॉकडाउन के दौरान राज चौपले पर मास्क वितरित करती राष्ट्रीय सेवा योजना

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

रोवर्स–रेंजर्स समागम में अतिथियों का स्वागत करते पूर्व प्राचार्य

राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर में खिलाड़ियों को सम्मानित करते कार्यक्रम अधिकारी

बौद्धिक सम्पदा विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

महिला प्रकोष्ठ के कार्यक्रम में विजेताओं को पुरस्कृत करती मुख्य अतिथि

महिला प्रकोष्ठ समारोह

CHOICES

Soniya
B.Sc. Ist Year

Stop listen and think are the choices you make in your life
good or bad
Think to yourself for a moment; do your, choices make you feel
happy or sad
Wait a minute; before you let feeling get in the picture.
I mean what's morally right
Does this mean getting involved in illicit sex, drugs, alcohol
or gangs make you disappear in your friend sight
No! Morally right means being trust worthy, honest and loyal
the person you are
Morally right means having self control when around friend
and peers concerning all the things you do
Making choice are a good thing when you consider the moral
fibers of your choice
When the pressures of life are too much for you to bear.
listen to your heart, it speaks to you in a silent voice.

ELECTION IN INDIA

Hriteek Nehra
B.B.A. IInd Year

India is a union of states with a Parliamentary system governed under the constitution of India, which defines the power distribution among the central government and the states.

The President of India is the ceremonial head of the country and supreme commander in chief for all defence force in India.

However, it is the Prime minister of India, who is the leader of the party or Political alliance having a majority in the country wide elections to the Lok Sabha that exercises most executive powers for matters that require country wide powers under a federal system.

India is regionally divided in to states has a Chief Minister who is the leader of the Party or Political alliance having won majority in the regional elections other wise known as State Assembly Elections that exercises executive Power in that state. The respective State's Chief Minister has executive Powers with in the state and works jointly with the Prime Minister of India or his minsters on matters that require both state and central attention.

SAVE GIRL CHILD

Rakhi Sharma
M.Sc. Ist Year

A world without us . . . . .

A Girl . . . . .

One of the most beautiful creation of God.

U can feel her innocence in form of a "Daughter"

U can feel her care in form of a "Sister"

U can feel her warmth in form of a "Friend"

U can feel her passion in form of a "Beloved"

U can feel her dedication in form of a "Wife"

U can see her divinity in form of "Mother"

A "PAPER LESS SOCIETY"

Khushbu Bhatnagar
Librarian
(Dr. Ranganathan Library)

The "paperless society" is a myth. It over looks the fact that libraries are repositories of the recorded knowledge of many generations. Today's library contains papyri, scrolls, books, journals, newsletter, phonodiscs, videotapes, and magnetic tapes - each created in a different era, but each recording the knowledge of its town and / or on earlier era. In libraries new technologies don't displace older ones, they augment them.

The challenge of the future for libraries is not supporting a new electronic literacy, but supporting the "multi-literacy" that will be required of people in future years. The who is literate only in the written word in the new millennium will be at a disadvantage, as will be the person who is literate only in the use of computer technology. The future of libraries is a mosaic that will make libraries more complex then ever. In addition to book stacks and reading tables, there will be carrels with computer terminals.

The Library may support remote computer terminals with databases which have been locally developed. The catalogues of the resources in the library may be the first databases a library databases, but it is likely that other files of information will be put on a local computer. Information of local interest or for which there is too small a potential user base to justify a commercial firm offering the service are likely candidates.

The rate at which all of this will happen is difficult to predict. The diffusion rate for new -technologies is much slower then many forecasters concede. There are many constraints on the diffusion of a new technology; technical, economic, marketing priorities, copyright, government regulations and personal attitudes.

Start where you are. Use what you have. Do what you can.

–Arthur Ashe

THE LAST PAGE OF MY NOTE BOOK

Rakhi Sharma
M.Sc. (Biotech) Ist Year

I always hoped no teacher will ever look
The last page of my note book.
It is full of scribbles and doodles.
Pictures of people houses and poodles.
Memories of knots and crosses played with friends,
And some other scribbles which I now can't comprehend.
Dates of history and valencies of chemistry
A little of a Hitch cock mystery
The time for an extra class.
And the properties of a pyrex glass.
Scores of our cricketers names,
And of course, every teachers nick name.
I must confess that.
The last page is rally a mess;
And there is something I want to say
That this poem was written on the last page
of my notebook only yesterday.....

Success is no accident. It is hard work, perseverance, learning, studying, sacrifice and most of all, love of what you are doing or learning to do.

–Pele

3 THINGS TO REMEMBER

Rakhi Sharma
M.Sc. (Bio tech)Ist Year

Three things to maintain	Promise, Affection, Friendship
Three things to control	Tongue, Temper, Temptation
Three things to watch	Speech, Behaviour, Action
Three things to prevent	Laziness, Falsehood, Slang words
Three things to avoid	Smoking, Drinking, Gambling
Three things to use carefully	Pen, Sword, Knowledge
Three things to respect	Religion, Law, Old age
Three things to love	Honesty, Hard work, Truth
Three things to cultivate	Courage, Cheerfulness, Personality
Three things to admire	Beauty, Intelligence, Character

A winner is a dreamer who never gives up.

–Nelson Mandela

Don't watch the clock; do what it does. Keep going

–Sam Levenson

2020 The Word Of The Year

Dr. Komal Gupta
(Asst. Prof. Dept. of Chem.)

The year 2020 is an unforgettable year for all of us. In the year 2020. We have heard many words like Covid-19, Corona, Pandemic, Social-distancing lockdown, Quarantine, Isolation, Asymptomatic and many other such words. But that is the only part of the story of this year. There has been a profusion of devastating events from floods, Super-Cyclones, landslides, Earthquakes and locust attack to plane crashes, Protests and deadly gas leaks, Chemical blasts, Economic downturns and many more.

Anyone of these words would have been enough to generate a 'numero-uno' word, but when these all happened in successive months. Surely the winner can only be the year itself. So we can propose the word of the year to be "2020".

SOME EXAMPLES OF PHYSICS IN EVERYDAY LIFE

Anuj Bhatnagar
Lab Assistant {Department of physics}

On this "living planet" that we call earth, there are lots of interesting events that take place. These events are around us, which we see or do or experience regularly. At some point in time, your curiosity would have pushed you to ask question about what's going on? How does that happen? Well leaving miracles apart, the answer to all these questions is "Physics". In fact, Physics govern our everyday lives in one way or the other. Let's have some examples of physics in everyday life:

Alarm Clock

Physics get involved in our daily life right from you wake up in the morning. The buzzing sound of an alarm clock helps you wake up jn the morning as per your schedule. The sound is something that you can"t see, but hear or experience. Physics studies the origin, propagation, and properties of sound. It works on the concept of quantum Mechanics.

Steam Iron

Right after you wake up in the morning and start preparing for your school/ office, you need an ironed cloths, and that's where physics comes into play. The steam iron is such a machine that uses a lot of Physics to in its functioning.

Walking

Now, when you get ready for your office/school, whatever medium of communication is, you certainly have to walk up to a certain distance. You can easily walk is just because of physics. While you have a walk in a park or on a tar road, you have a good trip without slipping because of a sort of roughness or resistance between the soles of your shoes and the surface of the road. This resistance, which is responsible for the grip is called "Friction" or "Traction".

Ball point pen

Wether you are at your workplace or in your school, a ball point pen is your weapon. Had physics not been there you would not have been able to write with a ball point on a paper. In this case, the concept of gravity comes into play. As your pen moves across the paper, the ball turns and gravity forces the ink down onto the top of the ball where it is transferred onto the paper.

CRISPR/Cas9 technology has introduced new opportunities in cancer therapies, curing inherited diseases and also in plant inbreeding.

Ms. Richa Yadav & Ms. Anjali Rajpoot
Assistant Professor Department of Biotechnology

Bmmanuelle Charpentier and Jennifer Doudna were awarded the Nobel Prize in Chemistry 2020 for discovering one of gene technology's sharpest tools: the CRISPR/Cas9 genetic scissors.

Using components of the CRISPR system, researchers can add, remove, or even alter specific DNA sequences. This technology has introduced new opportunities in cancer therapies, curing inherited diseases and also in plant inbreeding. Emmanuelle Charpentier who was studying a bacteria called Streptococcus pyogenes, noticed a previously unknown molecule called tracrRNA. Further studies revealed that this tracrRNA was part of the bacteria's immune system and it helps the bacteria destroy viral DNA. She published this discovery in 2011.

The same year, along with Jennifer Doudnathey, she succeeded in recreating the bacteria's scissors and reprogramming it. Charpentier and Doudna then proved that they can now use these scissors to cut any DNA molecule at a required site.

These sequences are a part of the bacteria's immune system. Bacteria that have survived a virus infection add a piece of the genetic code of the virus into its genome as a memory of the infection. In addition to these CRISPR sequences, researchers discovered special genes called CRISPR-associated, abbreviated as cas.

LITTLE BOY

Garima Sharma
B.A. Ist Year

Little Boy and His mother
Are crossing the bridge
Mother says!
"Son, Hold my Hand Tight"
Boy says:
"No Mom, you hold my hand"
Mother asks;
"What is the difference?"
Boy Answer:
"I may leave it in some difficulty
But if you hold my hand
For sure you will hold onto it forever"

ROLE OF LIBRARIANS IN MODERN ERA

Mrs. Shalini Gupta
Asst. Prof., LIS Department

New paradigms have evolved in the field of library and information science in last two decades due to ICT impact and digitalization of library resources and totally change the earlier meaning of library from document preservation to knowledge management. The library professionals are facing new challenges because of unprecedented explosion of information and its availability in different forms which are created by globalization, privatization and liberalization of every aspect of human life in one way and emergence of ICT and its application in generation, communication and access of information in another way. The present digital environment has brought a lot of changes not only on the library and information services but also on the roles and expectations of the library professionals to satisfy their user's information demand.

Today librarian is not as librarian only but now he is known as Information Officer, Information Scientist. The librarian as the intermediary has major responsibility vested upon him as he has the responsibility of acquisition, storage, retrieval, communication and use of information, decision making is the largest responsibility to him and MIS should be prepared by him. Librarian has to have with a background of librarianship and computer technology, since this hybrid technology will be able to bring qualitative change quickly.

Now days, information overload is on one side, and the development of technology and their application to storage, processing and dissemination of information and on the other side fast growth of subjects with complex interdisciplinary character and increasing demand for specific information have created big problems for the today's librarian. Without modern equipment and a well qualified librarian no library satisfies its users.

21st century will be the age of paperless society. Paper based documents will be vanished from everyday life. Librarian of tomorrow will have to bring themselves at per with manager in order to either sphere of activities.

LAW LIBRARIES

Dr. Geetanjali Sharma
Ass. Pro. & HOD
Dept. of Library & Information Science

The law library is distinguishable from other libraries because of its specialized and highly technical reading documents available and organized therein. Another characteristics feature of law library is the special needs of its clientele. Several specialized groups of persons who need to make regular use of the extensive law collection have their own view point.

A lot of reference to legal documents has to be made by lawyers as human mind cannot memories them all. Further memories may also be limited and short. Lawyers and their juniors may collect the relevant laws by themselves as far as they can. But this is different and involves tremendous task for them. Accordingly in order to save time, such legal materials have to be drafted promptly and pin pointedly and passed over to proper quarters.

Probably most numerous are law students, law teachers, practitioners of law and judges. It also includes many other sizable groups, such as civil servants, local government officers, research scholars, legislators etc. every one of these users should have his own idea of the types of legal documents/books a law library should usually contain.

Library service comes forward to rescue them of their impasse and provides the Bench and the Bar with necessary materials required with utmost promptitude. The function of a good law library is that of responsibility, efficiency and expediency so that relevant acts, rules, interpretations and case laws that are extremely necessary in legal profession to enable the judge and the lawyer in arriving at needed justice. Thus, it has been rightly remarked about a law library that "The law library is truly a vital factor in the administer of justice, an institution of extraordinary social significance in a free society".

Unlike almost all other libraries, a law library, while it serves the purposes of all other libraries, is not merely a collection of books and other writing containing information, reason, argument, and opinion to be organized by

skilled librarians for convenient use by readers. It is such a collection, but, more important, it is a repository of living systems of authority as well as of reason-systems which change and grow from day to day. Most law books, once on the shelves, are not left unchanged and merely and made available for use. They are affected by the new materials added to the library from day to day and the effect of the new materials must be entered on the old. For example, legislative materials must be amended and annotated in the light of new legislation; case reports must be "noted up" in the light of new cases. However, skilled and experienced he may be, a general librarian is not adequately equipped to organize and manage such a library. In addition to his librarian's training he needs special training to enable him to understand the workings of the authoritative systems of law to which his library gives the lawyer access.

Don't say you don't have enough time. You have exactly the same number of hours per day that were given to Helen Keller, Pasteur, Michelangelo, Mother Teresa, Leonardo Da Vinci, Thomas Jefferson, and Albert Einstein.

–H. Jaskson Brown Jr.

SCIENCE, SOLDIERS, FARMERS

Anjali Royal
B.Com. IInd Year

See where India has reached now,
Everybody says wow.
It has many new Inventions,
because of people's attention.
Science has given us a lot,
Yes, also if it is a motor boat.
Soldiers are on borders for our life,
So that we can be alive.
Farmers grow food.
So that our health can be good.
Farmers do not think about clothes
They just think about crops.
So these people help to live,
So we should be thankful to these.

NO SUCCESS WITHOUT COMPETITION

Ankita Yadav
B.Sc. Ist Year

"The best survives" says Charles Darwin. Today there is so much competition in the world that the above said phrase is proving itself true: Today, when I see around myself, I find the attitude of hopelessness among the youth. I ask my friends what would you do after graduation. They reply, "Nothing, there is no hope." What could be more disastrous for a nation than have such type of a mentality?

The progress and prosperity of any nation comes from the spirit of sheer competition among its citizens. Now one finds a few vacancies with respect to thousands of applications. As it is quoted earlier. "The best survives, the best would be selected."

Another thing which weakens the youth is the fear of failure. The panacea for that is not to think about failure, think I will succeed but how? Then plan accordingly and perform accordingly. Have the spirit.

The first thing required for success is single mindedness. Why was Arjun better than others? The answer is simple, it was his single mindedness. If one has one and only see one aim with full devotion and total dedication, one would get good results.

"You can if you think you can." The very word. 'Impossible lies in the dictionaries of fools, was the motto of the life of Napolean, "If you try, you will succeed," I am sure.

All our dreams can come true, if we have the courage to pursue them.

–Walt Disney

An open letter from the Girl Child to the leaders of the nation

Miss Mona Nagpal
Assistant Professor Botany

Dear leaders of Nation,

I am a proud Indian and I am a girl child living in a village in Uttar Pradesh. I study in a junior high school in seventh standard. The daily chores of my life apart from my studies of class Seventh include domestic work, care of siblings, working in farm and feeding two buffaloes in my house with the fodder that I collect from the farm and all through the sweet and bitter of my life, I dream and I dream big!

I have an overwhelming desire to become an IPS officer. After I finish my schooling, I want to pursue college education. The day is still green in my memory lane, when I went to a function in the village and a lady police officer was the chief guest. At that point of time, I had decided that I have to be one of such officers.

I want to learn Taekwondo, Judo-karate, skating, gymnastics but such sports facilities are not available in my village and my parents are fearful in sending me to the city as cases of proven inhuman behaviour with girls in recent times have added to their horror. Acid attacks, rapes, setting ablaze the girls alive, send shivers down their vertebral column and my helplessness is that I cannot do anything but be a part of the candle march to share their sorrow. Ensure me dear policy designers, when will I be secure? When will my family be convinced that I am safe in your hands? I want to fly high in the sky like birds, I want to feel free, when will the freedom percolate at the grass root level?

There are many schemes for adolescent girls—'Beti Bachao, Beti Padhao', "Kishori Shakti Yojana, Sukanya Samridhi Yojana", CBSE's Udaan Scheme, National Scheme of incentive to girls for secondary education, Balika Samridhi Yojana, Anti romeo Squads and many more well-concocted by the state and the central governments but the perception generated these days is that the girls are

safe in their houses and their freedom is still an apogee in existence.

In the prevalent set of practices many a girls can not catalyse their career choices and they become a school or a college dropout thus, diminishing the academic potential. Despite the priceless heritage of no sexual discrimination left by patriots in India, girls have to leave their school or college and go for early marriage which often leads to early conception and early deliveries leading to high IMR (Infant Mortality Rate) and high MMR (Maternal mortality Rate). Who is responsible for all these? It is an unscripted history that millions of dreams are put to rest and thousands of career choices are shattered. From the womb to the grave, from the innocence of childhood to the exuberance of youth and finally to the geriatric phase of life, a woman is made to sacrifice! When will this change?

Let my dream live!

Humbly yours,

Girl child of India.

SOME MEANINGS

Rakhi Sharma
M.Sc. (Bio tech)Ist Year

Meaning of Student

S	Social Worker	[भलाई के लिए कार्य]
T	Truth	[सत्य बोलना चाहिये]
U	Understand	[सभी को समझना]
D	Discipline	[सभी से मिलकर रहना]
E	Education	[विद्या मिलकर ग्रहण करना]
N	Natural	[किसी का पक्ष नहीं लेना चाहिये मिलकर रहना चाहिये।]
T	Try	[हर किसी कार्य को करने का प्रयास करना चाहिये।]

Meaning of Life

L	Love
I	Imagination
F	Friend
E	Entertainment

"Life" will become "Life" if there is not "F" of friend thanks for completing the spelling of my life.

The adventure of life is to learn. The purpose of life is to grow. The nature of life is to change. The challenge of life is to overcome. The essence of life is to care. The opportunity of like is to serve. The secret of life is to date. The spice of life is to befriend. The beauty of life is to give.

–William Arthur Ward

Annual Report 2019-2020
Department of Library & Information Science

Dr. Ravi Kumar
(Co-ordinator)

Department of Library And Information Science was established in its present form in the year 2002, beginning with B.Lib.I.Sc. course, under the worthy guidance of Principal, Prof. R.C. Lal.

Currently, the Department of Library and Information Science runs two professional P.O. degree courses successfully namely, M.Lib.I.Sc. & B.Lib.I.Sc. that are affiliated to Ch. Charan Singh University, Meerut. The Department has four well qualified and dedicated teaching staff members. The guest faculties are regularly invited for delivering lectures and providing training to students.

In the current session 2019-2020, a good number of students have been enrolled. To provide excellent and modern information to the students and faculty members, the department houses a rich library with a collection of over 4500 books. Computing and Wi-Fi enabled internet facility is also available for the faculties as well as students.

Meritorious students were awarded medals, wrist watches and certificates by Pro Vice Chancellor, Prof. Y. Vimla, Ch.Charan Singh University, Meerut, on the occasion of annual function (session 2018-19) of M. M. College, Modinagar. The toppers of the M.Lib.I.Sc. & B.Lib.I.Sc. in academic session 2018-19 were Ms. Shelly & Mrs. Neha Sharma respectively. Ms. Shelly of M.Lib batch 2018-19 was also awarded with cash of Rs.5100/- under Ratan Lal Savitri Devi NRI Scholarships for meritorious students. Ms Shelly has also awarded with Vice Chancellor Gold Medal for getting highest marks overall and also got award of excellence for the same.

Our student Dr. Ruchi Jain and Mrs. Shalini Gupta qualified UGC NET in Library & Information Science. In academic session 2018-19 a number of students were also placed in various reputed institutions.

Miss Payal Verma and Mr. Ashutosh Sharma of B.lib.I.Sc. got best worker award in skill India and award for best managing capability in NSS on Annual function. The session 2019-20 also witnessed several activities such as Teachers Day, Children's Day, National Science day, Annual Sports meet, Fresher Party etc. Our Faculty members and students were also involved in various activities held in college like Guest lectures held in various departments and other functions held. We hope and earnestly strive that in the near future, a large number of our students get suitable and prestigious placements & assure everyone that the course of activities in future will be implemented with high sense of dedication and discipline which will bring further glory to the college.

Annual Report 2019-2020
Department of Biotechnology

Dr. Ravi Kumar
(Co-ordinator)

Department of Biotechnology was established in the year 2002, under the worthy guidance of Principal, Prof. R.C. Lal. Currently, the Department of Biotechnology runs professional Post Graduate degree course, M.Sc. Biotechnology affiliated to Ch. Charan Singh University, Meerut. The Department has well qualified and dedicated teaching staff members. The guest faculties are regularly invited for delivering lectures and providing training to students.

In the current session 2019-20, a good number of students have been enrolled. To provide excellent and modern information to the students and faculty members, the department houses a rich library with a collection of over 4500 books. Department also has a computer lab with all the modern facilities. Computing and Wi-Fi enabled internet facility is also available for the faculties as well as students.

The session 2019-20 witnessed several activities such as:

Annual Function: Meritorious students of M.Sc. Biotechnology were awarded medals, wrist watches and certificates by Prof. Y.Vimla, Pro. Vice Chancellor, Ch.Charan Singh University,Meerut, on the occasion of annual function (session 2018-19) of M. M. College, Modinagar. The topper of the M.Sc. Biotechnology in academic session 2018-19 was Miss Aakansha Bhatt.

NRI Scholarship: Miss Aakansha Bhatt topper of the M.Sc. Biotechnology was also awarded Rs. 15000/- scholarship for scoring highest percentage of marks (91%) in college under Ratan Lal Savitri Devi NRI Scholarship for meritorious students.

Students Qualified National Level Exam: Miss Shikha Mittal and Miss Shushma Singh qualified CSIR UGC NET. Miss Deepshikha Prakash qualified GATE.

In Academic session 2019-20 a number of students also placed in various reputed organization such as Haldiram, Jamia Hamdard, Dabur etc. The session 2019-20 also witnessed several activities such as Teachers Day, Children's Day, National Science day, Annual Sports meet, Fresher Party etc. Our biotechnology Faculty members and students were also involved in various activities held in college like Guest lectures held in various departments and other functions held.

We make continuous efforts to set ourselves in a dedicated manner to promote our learners and make them empowered with qualities like honesty, patience, punctuality, hard work, decision making and many more.

Before Concluding, I assure everyone that the course of activities in future will be implemented with high sense of dedication and discipline which will bring further glory to the college, I am looking forward for a meaningful participation and co-operation from students and teachers in building this department stronger and better.

Annual Report 2019-2020
Department of Computer Science and Business Administration

Dr. Ravi Kumar
(Co-ordinator)

Department of Computer Science and Business Administration was established in its present form in the year 2002, beginning with NIELIT 'O' level course, under the worthy guidance of Principal, Prof. R.C. Lal.

Currently, the Department of Computer Science & Business Administration runs various courses successfully namely,'O' level, CCC Software courses of NIELIT, New Delhi and three years professional degree courses BBA & BCA, affiliated to Ch. Charan Singh University, Meerut.

The Department has eight well qualified and dedicated teaching faculties. The guest faculties are regularly invited for delivering lectures and providing training to students.

In the session 2019-20, more than 300 students have been admitted in NIELIT 'O' level, BBA & BCA courses.

To provide excellent and modern information to the students and faculty members, the department houses a rich library with a collection of over 4500 books. The department is also equipped with more than 80 Computer Systems and other latest accessories. Computing and Wi-Fi enabled internet facility is also available for the staff as well as students.

Department of Computer Science was selected by U.P.Govt. for providing financial assistance to the students of OBC belonging to BPL (Below poverty Line) families. Under this scheme, Rs. 15,000.00 was given to 26 students for 'O1 level and Rs. 3500.00 for 5 students for 'CCC' course in the academic session 2019-20.

Meritorious students of various courses were awarded medals, wrist watches and certificates by Prof. Y. Vimla, PVC, Ch. Charan Singh University, Meerut on the occasion of annual function of the college. The topper of the computer department in academic session 2018-19 was Ms. Nazma of BCA and Mr. Ankit Rawat of BBA.

Mr. Ankit Rwat of BBA was also awarded with certificate and a cash prize of Rs. 5100.00 under Ratan Lal Savitri Devi Gupta NRI Scholarship and Award for meritorious students.

The session 2018-19 witnessed several activities such as Teacher's day celebration; Birth anniversary of Shaheed Bhagat Singh, Dr. Rajendra Prasad Ji, Swami Viveka Nand Ji, Gandhi Jayanti & a fresher's party.

रोवर्स रेंजर्स द्वारा किए गए विशेष कार्य

कोराना महामारी के विरुद्ध आज देश एकता के सूत्र में बंधा हुआ है। वह महामारी से लड़ने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। शासन द्वारा लॉकडाउन का प्रतिबंध लगाने के बाद से ही महाविद्यालय का दयानंद रोवर्स दल एवं रानी लक्ष्मीबाई रेंजर्स दल अपने–अपने स्तर पर सक्रिय हो गया है। सभी रोवर्स रेंजर्स अपने मूल उद्देश्यों की तरह ही महामारी के इस काल में विभिन्न माध्यमों से जागरुकता फैला रहे हैं एवं जनहित के कार्यों में संलग्न हो रहे हैं। सामाजिक दूरी का पालन करते हुए सभी रोवर्स रेंजर्स कविता, संदेश, पोस्टर एवं वीडियो आदि के माध्यमों से लगातार अपने आस–पास के क्षेत्रों में जागरुकता फैलाने का काम कर रहे हैं। जागरुकता फैलाने के लिए वह सकारात्मक दृष्टिकोण से सोशल मीडिया का उपयोग भी लगातार कर रहे हैं।

महाविद्यालय के रानी लक्ष्मबाई रेंजर्स दल द्वारा जिला संगठन आयुक्त "गाइड" रिंकू तोमर एवं रेंजर्स प्रभारी डॉ. दीपशिखा बालियान के मार्गदर्शन और नेतृत्व में रेंजर्स द्वारा पोस्टर निर्माण, हस्तनिर्मित मास्क का वितरण, कोरोना योद्धाओं को हस्त निर्मित अभिनंदन पत्र भेंट करना, आसपास के क्षेत्र में सैनिटाइजेशन करना कर्मचारियों का सहयोग करना एवं आरोग्य सेतु ऐप, आयुष कवच ऐप को डाउनलोड कराने जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं।

हेड रेंजर मेघा द्वारा हस्तनिर्मित अभिनंदन पत्र बनाकर कोरोना योद्धाओं को दिए गए उन्होंने वीडियो संदेश द्वारा भी जागरुक करने का काम किया जिसको जिला स्तर पर सराहा गया। रेंजर दुर्गा द्वारा भी हस्तनिर्मित अभिनंदन पत्र बनाए गए दोनों ने ही अपने–अपने आसपास के लोगों को लगातार आरोग्य सेतु ऐप एवं आयुष कवच ऐप को डाउनलोड भी कराया। रेंजर्स ज्योति सचदेवा ने अपने घर पर ही स्वयं मास्क सिलकर आसपास के लोगों में वितरित किए। रेंजर कोमल ने अपने क्षेत्र में आई सैनिटाइजेशन की टीम का साथ देते हुए आसपास सैनिटाइजेशन करने का कार्य किया। रेंजर अंजलि ने "हम हैं कोरोना फाइटर" के नाम से विशेष संदेश देकर जागरुकता फैलाने का कार्य किया।

इसी प्रकार अन्य रेंजर निर्मल पाल, दीपिका, निकिता त्यागी, अंतिम, आयुषी आदि का भी कार्य सराहनीय रहा।

इस प्रकार अपने प्रभारी के नेतृत्व में रानी लक्ष्मीबाई रेंजर्स दल की पूरी टीम इस दौरान अपनी पूरी ऊर्जा और अपने संसाधनों के साथ जागरुकता के कार्यक्रमों एवं जनहित के कार्यक्रमों में लगातार अपना सहयोग करती रहीं।

महाविद्यालय का दयानंद रोवर्स दल भी अपने प्रभारी डॉ. रोहताश तोमर के मार्गदर्शन एवं हेड रोवर विशाल के नेतृत्व में बहुत से सराहनीय एवं उल्लेखनीय कार्य कर रहा है।

रोवर्स द्वारा भी अपने अपने स्तर पर जागरुकता भरे वीडियों संदेश, कविता, पोस्टर निर्माण, योग कक्षा, मास्क वितरण, आरोग्य सेतु ऐप एवं आयुष कवच ऐप डाउनलोड कराना एवं स्वास्थ्य मंत्रालय और आयुष मंत्रालय द्वारा समय–समय पर जारी की जाने वाली महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रसारित करने का काम लगातार किया जा रहा है।

हेड रोवर विशाल ने प्रारंभ से ही अपने आसपास के लोगों को जागरुक करने का काम शुरु कर दिया था लॉकडाउन होने के बाद उन्होंने लगातार इसका पालन करने की अपील एक वीडियो संदेश के द्वारा की। वे आयुष मंत्रालय एवं स्वास्थ्य मंत्रालय की जानकारियों को लगातार साझा कर रहे थे। उन्होंने लगभग डेढ़ सौ लोगों को आरोग्य सेतु ऐप एवं आयुष कवच ऐप डाउनलोड कराई उन्होंने अपने आसपास के बच्चों में एक चित्रकला प्रतियोगिता भी रखी। उन्होंने अपनी गली के कोरोना योद्धाओं सब्जी विक्रेताओं को मास्क वितरण भी किया। उन्होंने कोरोना योद्धाओं के सम्मान में एक कविता भी लिखी जिसकी कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई है:–

हे समर भूमि के योद्धाओं, तुम्हारा वंदन है।
हे मानवता के दूतों, तुम्हारा अभिनंदन है।

रोवर मनीष कुमार राठौर ने अपनी कविता के जरिए जागरुकता का संदेश दिया। उन्होंने हस्तनिर्मित पोस्टर भी बनाया उन्होंने ऑनलाइन माध्यम से योग की कक्षाएँ ली और योग के द्वारा रोग प्रतिरोधक क्षमता किस प्रकार बढ़ाई जा सकती है इस बारे में भी जागरुक किया।

इसी प्रकार पवन कुमार, प्रमोद कुमार सक्सेना एवं दिव्यांशु मिश्रा जैसे सक्रिय रोवर्स द्वारा हस्तनिर्मित पोस्टर निर्माण, कविता, वीडियो और क्षेत्र में जाकर भी लगातार सामाजिक सरोकार के कार्य किए जा रहे है।।

रोवर्स प्रभारी डॉ. रोहताश तोमर एवं रेंजर्स प्रभारी डॉ. दीपशिखा बालियान भी लगातार रोवर्स रेंजर्स के साथ लगे हुए हैं उनका लगातार उत्साहवर्धन कर रहे हैं। दोनों टीम के इन कार्यों की जिला स्काउट संस्था द्वारा लगातार प्रशंसा की जा रही है।

डॉ. रोहताश तोमर
प्रभारी दयानंद रोवर्स दल

डॉ. दीपशिखा बालियान
प्रभारी लक्ष्मीबाई रेंजर्स दल

विशाल हेड रोवर एवं रिपोर्ट संकलन
दयानंद रोवर्स दल
मुल्तानीमल मोदी महाविद्यालय, मोदीनगर

राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष रिपोर्ट : कोविड–19 काल

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना सक्रियता के साथ लगातार अपने कार्य कर रही है लेकिन कोविड–19 महामारी के दौरान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की चारों इकाइयों ने कार्य किया है।

महामारी के कारण हुए लॉकडाउन से देश एकदम ठहर सा गया था। तब हमारे स्वयंसेवकों ने अपने सामाजिक दायित्वों एवं स्वयंसेवा के कार्यों को नवीनतम रूप से आगे बढ़ाया।

मुख्यमंत्री राहत कोष में महाविद्यालय के प्राध्यापकों द्वारा लगभग ₹3 लाख रुपए के दान के बाद इसी विचार से महाविद्यालय के कार्यक्रम समन्वयक श्री योगेन्द्र प्रसाद सक्सेना एवं कार्यक्रम अधिकारियों डॉ. सुजाता, डॉ. मनीषा बालियान, श्री सुरेंद्र मिश्रा एवं स्वयंसेवकों के आवाहन पर महाविद्यालय स्तर पर भी एक कोविड–19 राहत कोष की स्थापना की गई। प्राध्यापकों एवं स्वयंसेवकों ने स्वेच्छा से इसमें दान दिया उसी दान से मास्क, सेनिटाइजर, साबुन इत्यादि खरीदे गए एवं आसपास के जरुरतमंद क्षेत्रों में उनका वितरण सुनिश्चित किया गया।

इस कड़ी में पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर सबसे पहले व्यापक स्तर पर सब्जी मंडी में मास्क, सैनिटाइजर, साबुन वितरण का कार्यक्रम किया गया। इसमें सब्जी विक्रेताओं, मजदूरों और पुलिसकर्मियों को भी मास्क वितरित किए गए।

मास्क वितरण का कार्यक्रम व्यापक स्तर पर किया गया। स्वयंसेवक अनित कुमार, पायल चौहान, संदीप कुमार, विशाल, शिखा आदि ने अपने–अपने क्षेत्रों में मास्क वितरण किया और लोगों को जागरुक किया। स्वयंसेवक प्रणब ने अपने पोस्टरों के जरिए कोविड–19 पर लगातार जागरुकता फैलाने का काम किया।

स्वयंसेविका पायल चौहान और प्राची वत्स ने अपने ही घर पर मास्क सिलकर उनका वितरण आसपास के क्षेत्रों में किया। प्राची वत्स ने हाथों पर मेंहदी कला के जरिए भी एक अनोखे अंदाज में जागरुकता फैलाने का कार्य किया।

कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मनीषा बालियान एवं स्वयंसेवक मनीष राठौर ने ऑनलाइन योग कक्षा लेकर स्वयंसेवकों को योग के प्रति जागरुक किया एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता के बारे में बताया।

कोविड–19 के दौरान विशेष कर्मचारियों का राष्ट्र सेवा और रक्षा में विशेष योगदान रहा इस बात को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना ने ध्यान में रखा इस कड़ी के कार्यक्रम समन्वयक श्री योगेन्द्र सक्सेना एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुजाता ने ट्रैफिक पुलिस कर्मियों, सफाई कर्मियों एवं मालियों को मास्क, सेनिटाइजर आदि का वितरण करके उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रेस एवं सोशल मीडिया प्रभारी विशाल, अनित कुमार, संदीप कुमार,

पायल चौहान आदि ने पत्रकारों को भी मास्क सैनिटाइजर आदि का वितरण करके उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुजाता ने अपने कविता लेखन के जरिए कोविड जागरुकता को बढ़ावा दिया। डॉ. सुजाता राष्ट्रीय सेवा योजना एवं यूनिसेफ द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम "मुस्कुराएगा इंडिया" की जिला स्तर की परामर्शदाता बनी। स्वयंसेवक विशाल ने भी "हे समर भूमि के योद्धाओं तुम्हारा वंदन है" कविता लिखकर कोरोना योद्धाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

स्वयंसेविका पायल चौहान एवं स्वयंसेवक विशाल ने अपने स्तर पर विद्यालयों के बच्चों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया एवं उन्हें कोरोना महामारी के प्रति जागरुक किया।

मास्क वितरण के कार्यक्रम के तहत ही कार्यक्रम समन्वयक श्री योगेन्द्र सक्सेना ने तहसील प्रशासन को भी लगभग डेढ़ सौ मास्क वितरण के लिए सौंपे। इस कार्य के लिए तहसील प्रशासन ने महाविद्यालय प्रशासन एवं राष्ट्रीय सेवा योजना का धन्यवाद किया।

विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना ने विभिन्न विधाओं में ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की। ऑनलाइन प्रतियोगिता में महाविद्यालय ने विश्वविद्यालय स्तर पर सभी महाविद्यालयों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। कविता प्रतियोगिता में विशाल (एम.ए. इतिहास तृतीय), आलेख प्रतियोगिता में प्रमोद (बी.एस–सी. तृतीय), गीत प्रतियोगिता में मुकुंद शर्मा (बी.एस–सी. द्वितीय), कुशलता पत्र में सृष्टि त्यागी (एम.एस–सी. बायोटेक तृतीय), 'मेरी डायरी का पन्ना' में राधिका तृतीय एवं 'डिजिटल पोस्टर' में अरविन्द कुमार (एम.एस–सी) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स्वास्थ्य विभाग उत्तर प्रदेश यूनिसेफ एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक प्रशिक्षण सत्र में स्वयंसेवक विशाल, प्रणव और पायल चौहान ने जिला चिकित्सालय में प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया।

भारत सरकार द्वारा स्वयंसेवकों के लिए कोविड–19 पर सामान्य जानकारी के तहत कराई जा रही आई गोट ट्रेनिंग पर भी स्वयंसेवक लगातार ट्रेनिंग ले रहे हैं एवं प्रमाण पत्र प्राप्त कर रहे हैं।

कोविड–19 जागरुकता कार्यक्रम के अंतर्गत ऑनलाइन ही महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई जिसमें अपने स्वयंसेवकों के अलावा आसपास के कई महाविद्यालयों के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने प्रतिभाग करते हुए ई–प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

अलग–अलग संस्थानों, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों द्वारा आयोजित की जा रही प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भी हमारे स्वयंसेवक प्रतिभाग कर रहे हैं एवं उसमें विजेता भी बन रहे हैं।

महाविद्यालय के स्वयंसेवकों ने अपने–अपने स्तर पर आरोग्य सेतु ऐप एवं आयुष कवच ऐप को न केवल डाउनलोड कराया, बल्कि लोगों को इसका उपयोग और महत्व भी बताया गया है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार महाविद्यालय के स्वयंसेवकों ने हजारों लोगों को दोनों ऐप डाउनलोड कराई है।

प्रवासी मजदूरों के लिए प्रशासन द्वारा महाविद्यालय में ही अस्थाई रैन बसेरा बनाया गया था। जहाँ पर जाकर स्वयंसेवक लगातार प्रवासी मजदूरों का हालचाल ले रहे थे।

इस तरह गत 5 महीनों में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा शासन, प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग एवं विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा दिए जा रहे आदेशों, नियमों एवं कार्यक्रमों का पालन करते हुए अपने सामाजिक दायित्वों एवं कर्त्तव्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया जा रहा है। स्वयंसेवक लगातार क्षेत्र में जाकर कार्य कर रहे हैं। इन कार्यों की लगातार महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और शासन स्तर पर प्रशंसा भी हो रही है।

श्री योगेन्द्र प्रसाद सक्सेना
जिला नोडल अधिकारी एवं कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. सुजाता
कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना

डॉ. मनीषा बालियान
कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना

श्री सुरेन्द्र कुमार मिश्रा
कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना

विशाल
रिपोर्ट संकलन
प्रेस एवं सोशल मीडिया प्रभारी
राष्ट्रीय सेवा योजना

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

गणतन्त्र दिवस कार्यक्रम

'फिटनेस इण्डिया' कार्यक्रम

IN SPITE OF WAR

BY ANGELA MORGAN

In spite of war, in spite of death,
In spite of all man's sufferings,
Something within me laughs and sings
And I must praise with all my breath.
In spite of war, in spite of hate
Lilacs are blooming at my gate,
Tulips are tripping down the path
In spite of war, in spite of wrath.
"Courage!" the morning-glory saith;
"Rejoice!" the daisy murmureth,
And just to live is so divine
When pansies lift their eyes to mine.

The clouds are romping with the sea,
And flashing waves call back to me
That naught is real but what is fair,
That everywhere and everywhere
A glory liveth through despair.
Though guns may roar and cannon boom,
Roses are born and gardens bloom;
My spirit still may light its flame
At that same torch whence poppies came.
Where morning's altar whitely burns
Lilies may lift their silver urns
In spite of war, in spite of shame.

And in my ear a whispering breath,
"Wake from the nightmare! Look and see
That life is naught but ecstasy
In spite of war, in spite of death!"

ऋतम्भरा
मुलतानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर